भोजन भौन सखी न सुहाय सुहायरहै निशिवासर बानी ॥ सूरसुता हि निहारी रही उनहारकछु हरिकी पहिचानी । आंसुन के परवाह कस्यो छिन एक खरोहो तरोसको पानी ॥ ४५६ ॥ त्रिकल अत्तर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० सोवतजागतसुपनबश रसरिसचैनकुचैन ॥
सुरतश्यामघनकीसुरत बिसरैहूबिसरैन॥४५७॥

यह अपने चित्तकी प्रीति सखीसों कहति है दशअवस्थाके भेदमें स्मृति जानिये ॥ सवैया ॥ बाहर जाउँ तौ बाहरही घर आऊं तौ आवत सङ्गलगेही । भौनके कोनमें बैठि रहौं हरि पैठिरहै हियमें पहलेही ॥ नींदहूमें नकवानी करै छिनहूछिन आवतहै सपनेही । सोवत जागत रैनदिना मनमोहन मोहन चैन न देही ॥४५७॥ नर अत्तर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० भोयहऐसोईसमौ जहांसुखददुखदेत ॥
चैतचांदकीचांदनी डारतकिये अचेत॥४५८॥

यह नायिका प्रोषितपतिका दशअवस्थानमें उद्वेग नायक को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ ब्यालभई अब मालतीमाल समीरते पीर हिये सरसाई । पावक पुञ्ज सों चम्पक चंदन चंद्र कुचंद्र लख्यो न सुहाई । चैतहरै चित चैतकी चांदनी वेधत बानन काम कसाई । आनि बन्यो अब ऐसो समौ दुखदेत सबै जु हुते सुखदाई ॥ ४५८ ॥ मराल अत्तर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० हौंहींबौरीबिरहबश कैबौरोसबगांव ॥
कहाजानियेकहतहैं शशिहिशीतकरनांव॥४५९॥

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिका को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कुंभजहू अचयो सुपचयो न याहीते उगडास्यो तमहू डरपि विवकंदसों । देखी अवलिनको कलङ्की लै चढ़ायो शीश ईशकहा जानि हित कीनों मतिमंद सों ॥ कैधौं सबहीकी मति हीन भई मेरी आली कैधौंहौंहीं बौरीभई मैन दुख द्वंदसों ॥ ४५९ ॥ पयोधर अत्तर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० औरभांतिभईअबये तौसरचन्दनचंद ॥
पतिबिनअतिपारतविपतिमारुतमारुतमंद॥४६०॥

प्रोषितपतिका ॥ कवित्त ॥ भेई भेई सुखद दुखद अब तेई भये कविददुर बिछुरतयदुपतिय । शीतल मंद सुगन्ध है सोई हुती सोई भई अनिल अनिल

हसेतातिय ॥ तरुभये तीर व्यालभई बल्लिय जगुभई यमुन कुसुमगाये कलिय ॥ जिन बन हम बिहरति श्रीपतिसंग तिनबन अब बिहरन लागि छतिय ॥४६०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवतचलिजातउत चलीछसातकहाथ ॥
चढ़ीहिंडोरेसेरहे लगी उसासन साथ ॥ ४६१ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका कृशताको आधिक्य सखी को बचन नायक सों सखी सखीहूं सों कहै तो होय दश अवस्थान में व्याधि श्वास संचारी सुकुमारता न संभवैहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलो चलि देखिये आपही जाय बियोगनके ढंग । थोरेई द्योसनते लखिये सबदेह चढी जरदी हरदी रँग ॥ बैसहूके भरमें यहि भाँतिपरे पर हीन खरे दुबरे अँग । पैंड़ छसात हिंडोरेसे बैठी जु आवतजात उसासनके सँग ॥ ४६१ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० हरिहरिकरिबरिबरिउठति करिकरिथकीउपाय ॥
बाकोजुरबलिबैदज्यों तौरसजायतो जाय ४६२॥

यह नायिका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था बिरहनिवेदन सखीको बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ हरि हरि रटत बदत व्यथा छिनु छिनु बरि बरि उठत वाके नेरेजात जरिये । करि करि थकीहै उपाय सब आली अब कछु न बसाय उरशोच भार भरिये ॥ येहो बलिबैद अब रावरे सुरसही बचै तो बचै बाल बलि वाकी पीर हरिये । तीखा ताप टारिये धरम उरधारिये निवारिये गहरु करुणाके ढार ढरिये ॥ ४६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मरी डरी कि टरी व्यथा कहा घरी चलिचाहि ॥
रहीकराहिकराहिअति अबमुखआहिनआहि४६३

यह नायिका प्रोषितपतिका दशअवस्था भेदमें जड़ता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ ऐसीको छांड़ि बिदेशगयो हरि जो कबहूं बिछुरी न घरी है । हाय यहै रट लायरही गति याकीलखे मतिभेरी हरी है ॥ बाल त्रियो बरजागि भरी बेकराहनि क्यों अबहीं बिसरी है । पीरटरी कि परीहै मरी चलि देखि अरी कहा दूर खरी है ॥ ४६३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मरनभलोबरबिरहते यहबिचारचितजोय ॥
मरनमिटैदुखएकको बिरहदुहूंदुखहोय ॥ ४६४ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिका को बचन सखीसों अरु नायकहू को ब-चन सखीसों संभव है ॥ सवैया ॥ नेकहीके बिछुरे सबही सुखसाज भये दुखदाय-क भारे । नैननमीर झरीबरसैं तरसैं छतियां बिन प्राणपियारे ॥ आली वियोग ब्यथा हरिबेते भलो मरिबो मन मान्यो हमारे । एक को दुःख मरे मिटिजात बि-योग में होत हैं दोऊ दुखारे ॥ ४६४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु२२ बिरहनिवेदन ॥

दो० करके मीड़ेकुसुमलौं गईबिरहकुँभिलाय ॥
सदासमीपनसखिनहूं नीठपिछानीजाय ४६५॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन नायकसों अरुसखीको बचन सखी सों होय ॥ कवित्त ॥ प्यारे नँदनंदन तिहारे बिछुरे ते मोपै कहत बनैन जैसी भ- वाकी गति है । आली जे रहत निशिबासर समीप तिनहू पै पहिचानी वह नीठही परति है ॥ त्रासदेखि पास जैबो छोंड़्यो पासवान नेह येते मान मदन हुताशन बरति है । कोमल कुसुम मानो मीड़्यो करवर करि ऐसे कुंभिलाय मुरझाय गई जातिहै ॥ ४६५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकनजानी परतयों पर्‍यो बिरहतन छाम ॥
उठतदियेलौंनादिहरि लियेतिहारोनाम ॥४६६॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ कान्ह तिहारे वियोगते वाको बिहात घरी निशिबासर कीसी । छाम भयो अतिही तनवाम को काम दई सुधि बुद्धि हरीसी ॥ सेज में नेकहू जानी परै नहिं देखिये कंचनरेख लिखीसी । रावरो नाम सुनै इकबारही नादिउठै घृतिदीप गहीसी ॥ ४६६ ॥ मरालअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जो वाके तनकी दशा देख्यो चाहत आप ॥
तौबलिनेकबिलोकिये चलिअचकाचुपचाप ४६७

यह नायिका प्रोषितपतिका ब्याधि अवस्था सखीको बचन सखी सों नायक को लै चलिबो प्रयोजन है ॥ सवैया ॥ पाहनकी पुतरी है परी बरसैं अँसुवा सरसैं तनतापैं । ज्यों ज्यों करै उपचार बरै त्यों पर्‍यो हम लोगनको अति पापैं ॥ वाकी दशा अब ऐसी भई हरि जिन अबलों कोई चाहत आपैं । तो यह शोभल है न बला त्यों यों अचका चलिये चुपचापैं ॥ ४६७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० तजतअठाननहठपर्‌यो शठमतिआठौंयाम ॥
भयोबामवाबामको रहतबामकेकाम ॥ ४६८ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरह निवेदन सखी को बचन नायक सों सखी सखीहू सों कहै तो संभवहै ॥ कबित्त ॥ लालमनभावन तिहारे बिछुरेते बाल बिरह अगिनिमें बरत नेहनाधे हैं। वेहीकाम काम बामदेवके परमभूमि दत्योंवाही बाम सों बिषम बैरबांधे हैं ॥ शठमति हठभरि दबाधर परिहरि आठों यामरहत सरोस रससाधे हैं। कीमेधों कहा उपाउ छोड़त न औटपाड तकै इनिबेको दाउ लग्यो इर बांधेहैं ॥ ४६८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बालबेलिसखिसुखदई रहीरूठिरुखधाम ॥
फेरडहडहीकीजिये सुरससींचिघनश्याम ४६९॥

यह अनुराग निवेदन सखीको बचन नायकसों पुरुष मानहूके प्रसंगहूमें संभव है ॥ कबित्त ॥ हितकर जाको हरिलीन्यों चित लाल यह कितहै उचिततादि येतो दुख दीजिये। जानतहौ नीके प्रीतिरीति को प्रवीणपतु कीजे न गहर सुख दैके सुख लीजिये ॥ रावरे दुसहयेही रूखे रूखभामहीं सो बालबेलि सूखी जाहि निरख सुखीजिये। प्यारे घनश्याम जगभरनि निबारतहौ सींचिकै सुरस फिरि डहडही कीजिये ॥ ४६९ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लालतिहारेबिरहकीअगिनिअनूपअपार ॥
सरसैंबरसैंनीरहू झरहूमिटैनझार ॥ ४७० ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन नायकसों बिरहनिवेदन ॥ कबित्त ॥ कंधण प्राणप्यारेलाल बिछुरेतिहारे बाल अतिही बिकल मिलबेको तरसति है। सारीहोत सीरे उपचार तातें ताती छिन छिन अकुलात छाती पीर परसतिहै। बाकेतन रावरे बियोगकी अगिनि ऐसी अदभुत गतिसों अपार दरसति है। महाझरहूते झार सीरी न परत परि जरत ज्योंज्यों नीरकी झरनि बरसति है ॥ ४७० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देखतदुरैकपूरलौंउपैजायजिनलाल ॥
छिनछिनजातखरीखरीछीनछबीलीबाल ४७१ ॥

यह नायिकाको अनुराग निवेदन सखीको बचन नायक सों बिरह निवेदन-हू होय ॥ कबित्त ॥ बिछुरे तिहारे लाल बिरखी बिकलबाला परी बिललात क्यों

हूं धीर न धरातहै । येतेमानकृशभई परे परयङ्कपर नीठि निठ निरख्यो परत वाको गातहै ॥ काल्हही सुआजु नाहिं आजुही सुअब नाहिं याते परजननको जीव अकुलातहै ॥ ऐसी छिन छीजनि बिलाय जिन जाय बाल ज्यों कपूरदानीमें कपूर उड़जातहै ॥ ४७१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हँसिउतारहियतेदई तुमजतिहींदिनलाल ॥
राखतप्राणकपूरज्योंवहैचुहटनीमाल ॥ ४७२ ॥

यह अनुराग निवेदन है सखीको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ दूबरी ऐसी भई बिछुरे तिय सेजहूमें न लखी परै सोतौ । आली बिलोकिकै मंडित हाथ गयो इकंसाथ सबैसुख जोतौ ॥ बीसबिसे उड़जाते कपूरलौं राखौ तो प्यारीके प्राणन कोतौ । जो वह लाल तिहारोदयो धुंघचीको हरा उरमांझ न होतौ ॥ ४७२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहाकहौंवाकीदशा हरिप्राणनकेईश ॥
बिरहज्वालजरिबोलखैमरिबोभयोअशीश४७३॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरेतें बृषभानुकी कुमरिभई खरी कलिकान है । जलबिन मीन ज्यों बिकल तलफत अति कहौं कविकृष्ण ऐसी होत आनबान है ॥ ज्यों ज्यों करियत उपचारनकी भीरत्यों त्यों बढ़त है दूनी पीर आंखिनहीं प्रानहै । बिरहकी ज्वालानि सों जरिबेके लेखे वाको मरिबेको बचन अशीश के समान है ॥ ४७३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० यहबिनसननगराखिकैजगतबड़ोयशलेहु ॥
जरीबिषमजुरजाइयेआयसुदरशनदेहु ॥४७४॥

यह नायिका प्रोषितपतिका ब्याधि अवस्था सखीको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ जरी है विषमजुर गिरीहै अचेत वह घिरीहै चहूंघा ब्याधि बृन्दन में खरिये । कंचन से तनको अतन बृथा बारत है रतन उबारिये यतन हरि करिये ॥ ऐसीगति देखो हौंतो मरत परेखो अब कछु न बसात छिन छिन जात बरिये । लीजियेजगत यश कीजिये धरम यह दीजिये सुदरशन वाको ताप हरिये ॥ ४७४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु ११ लघु २२ ॥

दो० मैंलैदयोलयोसुकर छुवतछिनकगौनीरु ॥

लालतुम्हारोअगरजा उरह्वैलग्योअबीरु४७५॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारेलाल बिछुरे तिहारे अब हियों ब्रजबालको अनंग दुख दाग्यो है। कोंवरी निपट कुंभिलायगई फूल जिमि दुख अनुकूलभौ समूलसुख भाग्योहै ॥ तुमपै गयेसों मैंन दीनोजाय वाही उन लीनो अति हितकरि चित अनुराग्यो है। करपरसतही छिनकगयो नीर अरु अगरजा उरमें अबीर ह्वैकै लाग्यो है ॥ ४७५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० थाकीयतनअनेककरि नेकनछांड़तगैल ॥
करीखरी दुबरीसुलखितेरीचाहचुरैल॥ ४७६ ॥

यह नायिका की लगन सखी को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ रोमनि रोमनि भोयगई हिय में घसि प्राणन मांझ खगी है। हौंकरिथाकी उपाय सबै हरियंत्रन मंत्रनहूं न जगी है ॥ देह सुखाय करी दुबरी तब बावरी ज्यों सुधि बुद्धि भगीहै। येते पै वाकी न छांड़त गैल चुरैलह्वै रावरीचाह लगी है ॥ ४७६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पियकेध्यानगहीगही रहीवही वहनारि ॥
आपआपही आरसीलखिरीझतिरिझवारि४७७॥

यह नायिका की लगन तनमैंता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेह लग्यो मनभावन सों उहितो अंगई यह बान नई है। ध्यानही ध्यान में आज कछू बृषभानुसुता भई कान्हमई है ॥ आरसी में लखि आपनी मूरति आपही रीझि निहालभई है। पूरन प्रेमकी ज्योतिजगी उर आनसबै सुधि भूलिगई है॥ ४७७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औरैपरैनकरै हियो खरेजरे परजार ॥
लावतघोरगुलाबमें मलैमिलैघनसार॥ ४७८ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका नायक को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ काहे को तू घनसार गुलाब में घोरि घनो घसि चंदन लावै। काहे को सियरे नीर भिगोय उसी रपान समीर डुलावै ॥ तोहीं कहा जक ऐसीपरी प्रजरी उर आगि खरी भजरावै। ये उपचार करै न परै कल जातपरै किन ताहि मिलावै॥ ४७८ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० रँगरातीरातैहिये पातीलिखीबनाय ॥
पातीकातीबिरहकी छातीरहीलगाय ॥ ४७९ ॥

यह पाती सखी को बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ जबते बियोग भयो लाल मनभावन सों तबहींते प्यारी तलफति मुरझायकै । नैनजल बरसति मिलिबेको तरसति सरसति मदनमरूर बहु भायकै ॥ अतिअनुराग में बनाये लिखि प्राणपति ऐसेमें अचानकही दीनी काहू आयकै । हित अकुलाती सोतो बिरहकी काती जानि राती पाती रही ताती छाती सों लगायकै ॥ ४७९ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कहाभयोजोबीछुरे मोमनतोमनसाथ ॥
उड़ीजाहुकितहींगुड़ी तऊउड़ायकहाथ ॥ ४८० ॥

यह नायककी पत्री नायिका को ॥ सवैया ॥ जो करतार रची सु सही बिधि और बिचार अकारथही है । बेदपुरान पुरानैसुनी सब कोऊ कहै यह गाथही है ॥ अंतर बीच परयो तो कहाभयो मोमन तो तुव साथही है । जाहु गुड़ी कितहूं उड़ि डोर उड़ावनहार के हाथही है ॥ ४८० ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० करलैचूमिचढ़ायशिर उरलगायभुजभेंटि ॥
लहिपातीपियकीलखतिबांचतिधरतिसमेटि ४८१ ॥

यह नायक की पत्री आई ताहि देखि नायिकाकी जो दशाभई सो सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ नैननीर बरसत देखिबे को तरसत लागे काम सरसत पीरउर अतिकी । पाये न संदेश ताते अधिक अंदेशे बड़े शोचै सुकुमार पै न कहै मन गतिकी ॥ ताही समय काहू औचकही आनि चिट्ठी दीनी देखतही सेनापति पाई प्रीति रतिकी । माथे लै चढाई दोऊ दृगनलगाई चूम छाती लपटायराखी पाती प्राणपतिकी ॥ ४८१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० कागदपरलिखतनबनत कहतसँदेशलजात ॥
कहिहैसबतेरोहियो मेरेहियकी बात ॥ ४८२ ॥

यह पत्री नायक की अथवा नायिका की परकीया ॥ कबित्त ॥ पाती में लिखत कैसे बनत जिती है चाह सागर को सलिल चुरूमें कैसे कीजिये । कहत संदेश उर आवत है लाज अति अधिक अंदेशा यहो छिन छिन छीजिये ॥ मन ऐसो मानसमिलैन कोऊ मषिपाती जासों समझाय जिय भेद कढि दीजिये।

यातेमीति रीति अबदातमेरे हियेकी बात आपने हियेते नीकी भांति जानि लीजिये ॥ ४८२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तरझुरीऊपरगिरी कज्जलजलछिरकाय ॥
पियपातीबिनुहीलिखीबांचीबिरहबलाय॥४८३॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहकी अधिकाई पत्री लिखबेते जानीगई ॥ कबित्त ॥ प्यारे को संदेश लिखिबे को बैठी साहसु कै लिखत बन्योना अतिबिरह मलीनी है। सरताते पानिके परसपरजरी और ऊपरते गिरी अँसुवानि जलभीनी है ॥ ऐसीपै लपेटि उनसौंपी सजनीके हाथ उनजाय त्योंहीं प्राणनाथ हाथ दीनी है। खोलतही पाती पिय ताती की सुरतिकरि छाती गहबरि आई आंख भरलीनी है॥ ४८३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बिरहबिकलबिनही लिखी पातीदई पठाय॥
आंकबिहूनीयोंसुचित सूनेबांचतजाय ॥ ४८४ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका की पत्री आई यातें दोउनके बिरहकी अधिकाई की शून्यता जानिपरी ॥ कबित्त ॥ बिरह मरूरते न तनकी तनक सुधि बाल अति ब्याकुल अचेत ऐसी ह्वैगई। लिखिबेको लई पाती लिखत बन्यो न कछू वैसीये लपेटि प्राणपतिपै पठैदई ॥ बाकी बिकलाई की कहांलौं अधिकाई कहौं एकसी दुहूँकीगति एकबेर ह्वै भई। चपरी मखीनी वह जऊ अकहीनी तऊ बांचि सुनि हियके लगाय छातीसों लई ॥ ४८४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चलतचलतलौंलैचले सबसुखसंगलगाय ॥
ग्रीषमबासरशिशिरनिशिपियमोपासबसाय४८५

यह पत्री नायिकाकी नायकसों ॥ सवैया॥ रैनदिना रहतेई मिले रसरंग उमंग-नमैं मनढारे। ऐसोसनेह बढ़ायकै देखरी कैसीकरी उन कान्ह पियारे॥ लैगयो संग लगाय सबै सुख दैगयो शोच टरै नहिं टारे। पूसकी यामिनी जेठ के द्योस बसाय गयो अब पासहमारे ॥ ४८५ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गोपिनकेअँसुवनभरी सदाअसोसअपार ॥
डगरडगरनैह्वैरही बगरबगरकेबार ॥ ४८६ ॥

यह ब्रज को बिरह निवेदन ऊधोको बचन श्रीकृष्ण सों सखीको बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ योग दैन गयोहौं बियोग बारि बारिधि में बूड़त बच्यो हौं नाथ

नारी नैन यों बहै । गंगहू सहस्रधार अधिक सुधारजानि बरषा न होहि जो रहोगे गिरिहू गहै ॥ येतोजल उनैहै न बारिधि समैहै कछू मुनिपै अचयो न जैहै कानखोलिकै कहै । कवि प्रहलाद जो मिलाप पारि बाँधिहो न बहुकि बटाके पात रावरे भलेरहै ॥ ४८६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कियोसयानसखीनसों नहिंसयानवहभूल ॥
दुरेदुराईफूललों क्योंपियआगमफूल ॥ ४८७ ॥

आगमोत्सव नायिका सखीसों सखीको बचन ॥ कवित्त ॥ ललित कपोल आजु मंदमुकुलन लागे आननपै भई कछू औरै अरुणाईरी । मैंतो पूछी सुखमानि तैं कछू रुखाई ठानि घूंघुटमें ढांकि मुख डीठ क्यों चुराईरी ॥ नाहींनै सयानपु बीस बिसे भूलिहै सयानी सज्जननसों करी जो चतुराईरी । फूलकी सुबासलौं बिकास पहली होत फूलहरि आगमकी क्यों दुरे दुराईरी ॥ ४८७ ॥ त्रिकल अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आयो मित्र बिदेशते काहू कही पुकार ॥
सुनहुलसीबिकसीहँसीदोऊदुहुननिहार ॥४८८॥

यह नायिका परकीया इक नायक उपतसों दोउनकी सनेह हैगयो आगम में दोउनके हर्षभयो याहीते परस्पर जानिपरी सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ कान्हर के बिछुरे ब्रजबाल दुवौ मनही मनमें मुरझानी । कृष्ण कहैं बहरायबे को मनु बैठ दुहूंमिलि चौपड़ठानी ॥ मोहन मीत बिदेशते आयो पुकारिकै काहू कही जब बानी । सो सुनि दोउ दुहून बिलोकि लसी बिलसी हुलसी मुसक्यानी ॥४८८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मृगनैनीहगकीफरक उरउछाहतनफूल ॥
बिनहीपियआगमउमगिपलटनलगीदुकूल ४८९

यह आगम स्वप्न पतिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बालखरी अकुलात हिये नँदलाल बियोग व्यथा उरजागी । ऐसेमें आन अचानकही हुलसी छतियां सुघरी अनुरागी ॥ बाम बिलोचन के फरके मृगलोचन जीसे उछाहन पागी । फूलभरी बिनहीं पिय आगम चारु दुकूल चुरावनलागी ॥४८९॥पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मलिनदेहवेईबसन मलिनबिरहकेरूप ॥

पियआगमऔरैउठीआननओपअनूप ॥४९०॥

यह आगमिष्यत्पतिका सखी को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ लाल मन भावन के बिछुरे मयंकमुखी अतिहि बिकल चित परयो चिंता कूप है । अधिक अनंग पीर तीरसी खगत हिय चांदनी लगत जैसी ग्रीषमकी धूपहै ॥ कीनो न शृंगारु चारु वैसी ये मलिन देह बसन मलिन उही बिरह के रूपहै । कहै कवि कृष्ण पिय आगम सुनत वाढी और ओप आननपै उमँगि अनूप है ॥ ४९० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहेबरोठेमेंमिले प्रियप्राणनकेईश ॥
आवतआवतकीभई बिधिकीघरीघरीश ॥४९१॥

आगमोत्सव नायिका को वचन सखीसों संचारी के भेद में औत्सुक्य जानिये ॥ सवैया ॥ आवे बिदेशते प्राणपती यों तियाकी सुने छतियां सियराई । नैनन लागिरही दिखसाध मनोज उमंग हिये भरिआई ॥ कृष्ण कहै मिलवे कहै कांहूसों पौरि में जौलों रह्यो सुखदाई । आवत आवतकी सुघरी बिधि बासरहू ते खरी सरसाई ॥ ४९१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहिपठायजियभावती पियआवनकीबात ॥
फूलीआंगनमेंफिरै आंगनअँगनसमात ॥४९२॥

आगमोत्सव सखीको वचन सखी सों संचारहर्ष ॥ सवैया ॥ बाल वियोग मलीन महा बिसरी सुधि हास बिलासहू भूलै । येते पै औधि व्यतीतभई उरमें कहो साथ सबै दुख ऊलै ॥ आवन त्यों मनभावनकी सुनिकै उमहै सुखपुंज समूलै । आंगन में हुलसी फिरै सुंदरि आंगन अंग समात न फूलै ॥ ४९२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाचअचानकहीउठे बिनपावसबनमोर ॥
जानतहींनंदितकरीयहदिशनंदकिशोर ॥ ४९३ ॥

यह आगमोत्सव नायिकाको वचन सखी सों सखीहूको वचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ राधा यों बिशाखासों कहति जाको रूप मोहिं चारु चित्रपट अवरेखते दिखायोरी । जानियत वह चितचोर नंदपूत धूत आली यहि कानन कहूंते आज आयोरी ॥ लहलही होत बहुकालकेरी सूखी बेल फूलत सुमन ऐसो बन छबि छायोरी । बिन उन एहूं घन भये हरषित मन नाचनाच मोरन कुलाहल मचायो री ॥ ४९३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० बामबाहुफरकतमिले जोहरिजीवनमूरि ॥
तौतोहीसोंभेंटिहौं राखिदाहिनीदूरि ॥ ४९४ ॥

आगमोत्सव भुज फरकतही नायिकाको बचन बाम भुजा प्रति ॥ सवैया ॥ कान्ह बिलासी बिदेश रह्यो बसि मैन दही बहु भांति हिये हौं। बाम भुजा फरकी तू भले अब हौंहूं यहै निश्चय पन कीहौं ॥ कैसेउ वा मनभावन को अब जो भरिआंखिन देखनपैहौं। राखिहौं दूरि या दाहिनी बामको तोहीसों गाढ़े अलिंगन दैहौं ॥ ४९४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बिछुरेजियसंकोचयह बोलतबनैनबैन ॥
दोउदौरिलागेहिये कियेनिचोहेनैन ॥ ४९५ ॥

यह परदेशते इन दोउनके हितको आधिक्य सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ दम्पति आपुस में कहते पलु ओटभये पलप्राण रहैना। आयो बिदेश बितै बहु बासर नंदलला अति चैनको ऐना ॥ येतो बिछोह भयेहू जिये यह लाजते बोलत बैनबनैना। दोऊलगे लपटाय हिये पै निचोहे किये सकुचोहे से नैना ॥ ४९५ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० यदपितेजरोहालबल पलकौलगीनबार ॥
तउग्वैंड़ोघरकोभयो पैंड़ोकोसहजार ॥ ४९६ ॥

यह परदेशते आगम आगतपतिका नायिका औत्सुक्यसंचारी ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको प्राण पिया परदेश सखी बहुतै बितयो है। राधिका की सुधि कै कविकृष्ण तिहींछिन भौनको गौन ठयो है ॥ यद्यपि तेज तुरी नियरोघर तद्यपि कोस हजार भयो है। ग्वैंड़ेको पैंड़ो न काट्योकटै अभिलाषसमूह हिये उनयो है ॥ ४९६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छिरकेनाहनवोढ़दृग करपिचकीजलजोर ॥
रोचनरँगलालीभईबियतियलोचनकोर ॥ ४९७ ॥

यह ज्येष्ठा कनिष्ठा को भेद अन्यसंभोगदुःखिताहू होय सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नन्दलला ललनागणमें जलकेलिरची रसरीति रलाई। चूम कलेउ बहुभांति दुरे भरिअंक करी तरलाई ॥ भावती लोचनके छिरके करकी पिचकी जलधार चलाई। सौतिके लोचन कोरन मांझ तहीं भई रोचनरंगललाई ॥ ४९७ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मिसहीमिसआतपदुसह दईऔरबहराय ॥
चलतललनमनभावतिहतनकीछांहछिपाय४९८

यह ज्येष्ठा कनिष्ठाके भेदमें संभवहै सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ कान्ह सुनानके मोपैकछू रसरीतिके भेद कहे नहिंजाहीं । आतप को मिसकै बहराय दई सँग और जिती बनिताहीं ॥ छैलगही वह गैलभटू यमुनातट केलि निकुञ्ज जहां हीं । राधिका प्यारीको लैचल्यो संग किये अपने तनकी परछाहीं ॥ ४९८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लाजगहौ बेकाजकत घेररहे घर जाहिं ॥
गोरसचाहतफिरतहो गोरसचाहतनाहिं॥४९९॥

यह नायिका प्रौढादानसमय ॥ कबित्त ॥ लाज क्यों न गहौ बिन काज मग घेरि रहौ इतराइबोल तुम कहत अनैसेहौ । गोरस न चाहतहौ गोरसको चाहतहौ भली भांति जानतहौं कान्ह तुम जैसेहौ ॥ कृष्ण प्राणप्यारे ब्रजबिदित तिहारेगुण माखनके चोरबेको घरघर पैसेहौ । अब यह बन ऐसे चलन चलावतहौ सोहै लखि हँसत लसत मन लेसेहौ ॥ ४९९ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पहलाहार हिये लसे सबकी बेंदी भाल ॥
राखतखेतखरीखरी खरोउरोजनबाल॥ ५०० ॥

यह नायिका जातिबर्णन नायिकाको बचन॥ सवैया॥ पातरौ लांक कठोरखरे कुचगोरी अंगेठलुनाई भरीहै । मेचकपीन हैं तेरे बड़े दग ओठन में अरुणाई धरी है ॥ हार हिये पहुलाको लसै बिलदीसन को पखुरीकी करी है । राखत खेदखरी ब्रजनागरि यौवन जाति खरी निखरीहै ॥ ५०० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० टटकीधोई धोवती चटकीली मुख जोति ॥
लसतरसोईकेबगर जगरमगरद्युतिहोति॥५०१॥

यह ज्ञातिबर्णन सखी नायकके रूपकी निकाई नायकसों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ बैठी अपरस ब्रजनागर सरबसबेष पेखि मनमोहनकी सुध बुध डगरी । कृष्ण प्राणप्यारेकी दुहाई बैस तैसीदई बिधिने सकेल शोभा कीन्हीं मानोंसगरी॥ दमकै बदन ज्योति बिशद बरन धौति पहिरे लसत सौति रूपगुण अगरी। है रसो

प्रकाश अति नगर नगर तिहि नगर रसोई के अम्बर ओप नगरी ॥ ५०१ ॥ म-दुकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यदपिनाहिंनाहींनहीं बदनलगीजगजाति ॥
तदपिभौंहहांसीभरिनु हांसीपैठहराति ॥ ५०२॥

यह जातिबर्णन नायिका प्रौढ़ासुरतारंभ ॥ सवैया ॥ बैठि शृंगार सबै ब्रजनारि अचानक मोहन आयो तहांहीं । पाणि गह्यो अवलोकि अकेलि अलौकिक केलि कला चित चाहीं । यद्यपि वा नवनागर के मुँहलागी यहै जकनानन नाहीं । त-थपि हांसिभरी भृकुटीनमें बीस बिसे ठहरात है नाहीं ॥ ५०२ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दृगथरकाहे अध खुले देह थको है डार ॥
सुरतसुखदसीदेखियतदुखितगरभकेभार॥५०३॥

यह जातिबर्णन गर्भिणी की शोभा सखी नायकसों कहै सखी सखी सों कहै नायक सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ बोलत बैन हरेई हरेरु भई छवि आननकी पि-यरीहै । आधे खुले अलसौहैं से लोचन देह थकीहै से ढारढरीहै ॥ गरभको भार धरै सुकुमार जऊ दुखितो नवनारि खरीहै । नीकी तऊ अति लागतहै मनो केलि कलोलके रंगभरी है ॥ ५०३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० ज्योंकरत्योंचुटकीचलति ज्यों चुटकीत्योंनारि ॥
छविसोंगतसीलैचलतिचातुरकातनहारि॥५०४॥

जातिबर्णन नायकको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ ज्योंकर त्योंहीं चलै चुट-की उघरे भुजमूल बड़ी छबिभारी । चारु कताई की मोरन ग्रीवकी टोरन जीव टरै नहीं टारी ॥ भौंह उचे तिरछे करलोचन लेत किधौं गतिरूप उजारी । चातुर मानो मनोजपत्नी अति चातुर कातनहारि निहारी ॥ ५०४ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मुखउघारिपियोलखिरहत रह्यो नगो मिससैन ॥
फुरकेओठउठैपुलक गयेउघरिजुरनैन॥५०५॥

यह जातिबर्णन परिहास सखी की बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पौरिते बोल सुन्यो पियको उठि पौढ़िरही पटओट सयानी । झीने दुकूलमें लाललखी बड़री अँखियां फलकैं सरसानी ॥ शिरोमणि ऐंचिलियो अँचरा बहरायके कान्हर त्यों

तिरछानी । ओटसों ओठ लगायरही दृगदाबि कपोलनहीं मुसकानी ॥ ५०५ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० नहिंअन्हायनहिंजायघर चितचहुव्योतकितीर ॥
परसपुरहरीलैफिरत बिहँसतिधसतननीर ॥ ५०६ ॥

यह जातिवर्णन नायिका परकीया क्रियाविदग्धा सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ न्हायवेको यमुनागई बाल तहां बनितानकी है अतिभीरो । त्योंहीं अचानक कृष्णकहैं कहुँडीठपर्यो नटनागरनीरो ॥ चाह चुभ्यो चित न्हाहि सुकौन गयो नहिं जाहु कँपातुशरीरो । अंजलिनीरभरै गहि डारत नाक सकोरि कहै यह सीरो ॥ ५०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मुँहपखारिमुड़हरभिजै शीशसजलकरछ्वाय ॥
मोरउचैघूंटैनुनैं नारिसरोवरन्हाय ॥ ५०७ ॥

यह जातिवर्णन कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ बैठिकेतीर पखारिकै आनन हाथ भिजै जलकेशन छ्वैकै । कृष्णकहैं करसों उसराइ कियौंधर्यो शीशको चीर भिजैकै ॥ दूकर पंकज दोऊखये धरिमोरि उचैकढ़ि खीनलचैकै । यों ब्रजबाल सरोवरन्हात महाछबिसों घुटुवानतेनैकै ॥ ५०७ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु२६॥

दो० बिहँसतिसकुचतिसीदिये कुचआंचरबिचबांह ॥
भीजेपटतटकोचली न्हायसरोवरमांह ॥ ५०८ ॥

यह जातिवर्णन कविकी उक्ति सखी नायिका की शोभा नायकको दिखायवेको कहै तौहूं संभवहै ॥ सवैया ॥ देव दिवाकरको करि बंदन कृष्ण कहै मनही में मनावति । बांहदिये कुचअंचल बीच लजाय हिये हँसि नैन नचावति ॥ भीजे दुकूलरहै लपटाय महाछबि कंचनसे तनछावति । यों ब्रजनागरि रूपउजागरि न्हाय सरोवर तीर से आवति ॥ ५०८ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मुँहधोवतिएँड़ीघसति हँसतिअनगवततीर ॥
धसतनइंदीवरनयन कालिंदीकेनीर ॥ ५०९ ॥

यह जातिवर्णन नायिकाकी चेष्टा सखी सखीसों कहतिहै॥ कवित्त ॥ न्हायवेको आई अति रीझि मंदरायहिये कृष्ण प्राणप्यारेको स्वरूप दरसतिहै । इंदीवरनैनी अनगावति अनेकभांति पै वह कलिंदीके न सलिल धसति है ॥ परसि बिसारै कैकै कोरिकोरि शोभानिधि नासिका सकोरि मुँहमोरि बिहँसति है । बदन पखा-

रतिहै बाके दृग ढारतिहै गुलफ घसति अतिरंग बरसति है॥ ५०६॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० ओठउचैहांसीभरी दृगमोहनकीचाल॥
मोहनकहीसुचालियो पियततमाखूलाल॥ ५१०॥

॥ यह जातिवर्णन नायिकाको बचन सखीसों॥ सवैया॥ मैं निरख्यो जबते तब ते जियकीगति जानत कौन बियोरी। जो कछु रूपकी रीझ झुमी चित जानतहै इक मेरो हियोरी॥ हांसीभरी चख मौंहनकी छबि ओठ उचे इकभाव कियोरी। पीवत लाल तमाखूकेघूट कही उनमोहन पीन लियोरी॥ ५१०॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० अँगुरिनउचभरिभीतिदै उलमचितै चखलोल॥
रुचिसोंदुहुनदुहूनके चूमेचारुकपोल॥५११॥

॥ यह जातिवर्णन दोउनके हितकीसी रसाई सखीको बचन सखीसों परकीया॥ सवैया॥ आज भटू ब्रजनागर नागरि कीनो बिलास महारस मान्यो। चाहकी चोपसों चाहिचहूंधा बियो जब कोऊ इतौं तन जान्यो॥ दै भरुअंतर भीति दुबो-चलमें अंगुरी उचिकौतुक ठान्यो॥ चारुकपोल दुहूनके दोउन चुंबनकै अतिही सुख मान्यो॥ ५११॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० हँसिओठनबिचकरउचै कियेनिचौंहे नैन॥
खरेअरेपियकेपिया लगीबिरीमुँहदैन॥ ५१२॥

यह जातिवर्णन नायककी शोभा सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ कान्ह कही अतिही हठकै तब राधिका के जियमें यह आई। ग्रीवनवाय दुरायकपोल किये नत नैन कछू मुसकाई॥ बीरी बनाय लई करकंज खवैबे को मंजुभुजा उक-साई। यों हितकी सरसाई बिलोकि भई मनमोहनके मनभाई॥ ५१२॥ मरा-लअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० नाकमोरिनाहींकहै नारिनिहोरेलेय॥
छुवतओठबियआंगुरिन बिरीबदनप्योंदेय॥५१३॥

यह जातिवर्णन सखीको बचन सखीसों॥ सवैया॥ आजदुहूंको बिलास अली मैं दुरै दरस्यो कहते नहिं आवत। नन्दलला अतिही हठकै वृषभानुकु-मारि को पान खवावत॥ ओठनसों बिय अंगुलि छुवै मुसकाय कै नैनसों

नैन मिलावत। नासिका मोरि मरोरिकै भौंह करै तिय नाहिं त्यों त्यों सुख पावत ॥ ५१३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बतरसलालचलालकी मुरलीधरीलुकाय ॥
सौंहकरैभौंहनहँसै दैनकहैनटजाय ॥ ५१४ ॥

यह नायिका परकीया प्रौढ़ा जातिबर्णन सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आज लखो वृषभानुलली मनमोहनसों रसखेलटरी है। बातनके चसकै मुरली मुरली हरिकै दबकायधरी है ॥ ज्यों ज्यों हहाकरि मांगै लला वह त्योंत्यों कछू अठिलात खरी है। दैनकहै मुकरै हँस भौंहन सौंहकरै रसभाय भरी है ॥ ५१४ ॥ मदकल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गदरानैं तनगोरटी ऐपन आड़ लिलारि ॥
हूठ्योदईचलायदृगकरतिगँवारिसँवारि ॥ ५१५ ॥

यह जातिबर्णन नायिका की शोभा नायक सखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ शोभाकेसे रसभरी रूपकेसे सांचेढरी बिनहूं शृंगार छबि कही न परति है। ललित लुनाईसने गातमें सरसभरे तरुणाई आनभरी औरहू भरति है ॥ बदुरारे बदन पै ऐपनकी सोहै आड़ तैसी ये चिबुकगाड़ मनको हरति है। सहज सुभाय अठिलायकै गँवारीगोरी हूठ्यो दै चलाय नैन घायल करतिहै ॥ ५१५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नाकचढ़ैसीबीकरैं जितेछबीलेछैल ॥
फिरफिरिजानवहैगहैप्योककरीलैगैल ॥ ५१६ ॥

यह जातिवर्णन सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सखि जातचले दोउ मारग में उराहने पांयन रंगढरैं। वह प्यारे की रीझ रिझावन प्यारी की मोपै न ओहू बखानिपरैं ॥ अतिनाजुक छैल छबीली तिया जित नाक सकोरि कै सीबी करैं। कवि कृष्ण कहै यह चाहपग्यो नित जानिकै प्रीतम पांयधरै ॥ ५१६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० जालरंध्रमगअगनुको कछुउजाससो पाय ॥
पीठिदियेजगत्योरह्यो डीठिझरोखालाय॥ ५१७॥

यह जातिवर्णन नायिका की अंगदीप्ति देखि नायक को और बात सब भूलगई है सो सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ प्यारी खरडतीसरे रसीली

रंग रावटीमें तकि ताकी ओर छकि रह्यो नंदनंद है। कालिदास बीचिन दरी-चिन है छलकति छबिकी मरीचिनकी झलक अमंदहै॥ लोग देखि भरमें कहा धौंहै या घरमें सुरङ्ग मग्यो जगमगी जोतिन को कंदहै। लालन को जाल है कि ज्वालन को भालहै कि चामिकरु चपला कि रबिहै कि चंदहै॥ ५१७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० दोऊ चोरमिहींचन खेलनिखेल अघात॥
दुरतहियेलपटायकै छुवतहियेलपटात॥५१८॥

यह जातिबर्णन चोरमिहींचना खेलत दोउन को बिलात सखी सखी सों कहतिहै॥ कवित्त॥ बेपुकै कुमारिकाको ब्रजकी कुमारिकानि मांझमांझ केशव-दास त्रास पगपेलिकै। कामकी लतासी चलिये मयासिसी अमज्ञ बुधिबल राधिकाके कंठ भुजमेलिकै॥ दुरदुर दूरिदूरि पूरिपूरि अभिलाष लाखलाख भांतिकी अनूप रूप केलिकै। जनीके अजिर आजि रजनी में सजनीरी सांची कीनी श्याम चोरमिहचनी खेलिकै॥ ५१८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० दृगमिंहचतमृगलोचनी भरेउलटभुजबाथ॥
जानगई तियनाथके हाथपरसही हाथ॥५१९॥

यह जातिबर्णन सखी को बचन सखी सों॥ सवैया॥ बैठीहुती बृषभानु कुमारि अचानक आयो तहां गिरिधारी। प्यारुकै लोचन मींचिलये उनहूं भुज लौटि भस्यो अँकवारी॥ मीतमके करके परसे उमँग्यो उर आनँद बुद्धि बिचारी। याहीते वा मनभावन को पहिंचान हँसी सुबिचक्षण प्यारी॥ ५१९॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० प्रीतमदृगमिंहचतपिया पानिपरस सुखपाय॥
जानिपिछानिअजानलौंनेकनहोतजनाय५२०॥

यह जातिबर्णन सखीको बचन सखी सों॥ सवैया॥ खेलत में कहूं पाछलीघातें अचानकही चलिआये बिहारी। मूंदके प्राणपियारी के नैन चह्यो चुप ह्वै रसरीति सँचारी॥ यद्यपि वा मनमोहन को कर लागतही उमँग्यो सुख भारी। तद्यपि जानिकै आपनी गौंहि अजान भई बृषभानुदुलारी॥ ५२०॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० दीठिपरोसिनईठह्वै कहैजुगहेसयान॥

सबैसँदेशेकहिकह्यो मुसकाहतमैंमान ॥ ५२१ ॥

यह परकीया प्रौढ़ा सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ जाइ परोसिनके दुखपीसों झुकी ललनारिसजीमें ढिठाई। सोही परोसिन ढीठ यहांलग ईठहै याहि मनावन आई ॥ प्रीतमके जे सँदेशे हुते वे कहे सबही करिकै चतुराई। येते पै मान कह्यो मुसकाय यहै कहि प्यारो खरीकै रिसाई ॥ ५२१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितलरसतमिलतनबनत बसिपरोसकेबास ॥
छातीफाटीजातसुनि टाटीऔठउसास ॥ ५२२ ॥

यह परकीया अनुराग नायकको अथवा नायिकाको बचन सखीसों ॥कवित्त॥ नीचीडीठि आपनपै कोलग चितैये बलि कैसेहून देखे जाहु जेतो शोच करिये। मुरलीकी धुनि सुनि द्वारेउभकीने सेखमनके डरैते तनही में कांप डारिये ॥ लाजन की भीर पल पैड़ोहून पावै नैन धीरे धीरे सकुच बचाई पांव धारिये। कीजै कहाकान्हर कनोड़े भये जीवों नाहिं नातो एक बासमें उसास लेले मरिये ॥५२२॥पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ढीठ्योदैबोलतहँसत प्रोढ़बिलासअपोढ़ ॥
त्योंत्योंचलतनपियनयनछकियेछकीनबोढ़५२३॥

यह मदपानसमय सखीको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ आज बरुतीकी बारनीकी मैं बिलोकी वह शोभा मेरे नैननमें अबलौं बसतिहै। ज्यों ज्यों वह ढीठ्यो द्वैकै बोलत सरसबैन नागरनबेली हेरिहेरि कै हँसति है ॥ कहै कविकृष्ण गर लागिबेको ललकाति प्रौढ़ा के सकल बिलास बिलसतिहै। त्यों त्यों छकि तियने छकाई ऐसे प्रीके नैन पलकनिहू की भूली गति दरसति है ॥ ५२३ ॥ अहिवर अक्षर ३८ गुरु ५ लघु ३३ ॥

दो० हँसिहँसिहेरतनवलतिय मदकेमदउमदाति ॥
बलकिबलकिबोलतबचनललकिललकिलपटाति५२४॥

कवित्त ॥ छिनकमें हँसै छिनरोवै छिन देखिरहै छिनकमें बैठि छिन लेटि लेटि जातहै। छिनकमें ठाढ़ी ह्वैकै सखिनसों बातैं करै छिनक में झूमि झूमि मुरमुसकातहै ॥ गातकी न सुधि न सम्हार कछू अंचर की छिनक में आलीहू के अंग लपटात है। छिनकमें रीझिरीझि यारको बदन चूमैं छिनक में

फेरि फेरि बूझे वही बातहै ॥ ५२४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मिलिचन्दनबेंदीरही गोरेमुँहनलखाय ॥
ज्योंज्योंमनलालीचढ़ै त्योंत्योंउघरतजाय ५२५ ॥

यह मदपान समय नायिका की शोभा नायकको कहै अथवा सखी सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ कछुआज लखी मदपान समय ललना कि प्रभा जियतें न टरै । कविकृष्ण कहैं बलकैं छलकैं मनमोहन को हँसि अंकभरै ॥ द्युति चन्दन की बिंदुलीकी रही मिलि गोरे लिलार न जानिपरै । अरुणाई चढ़ै मदकी मुख ज्योंहीं ज्यों त्योंहींत्यों जात खरी उघरै ॥ ५२५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० निपटलजीलीनवलतिय वहकिबारुनीसेय ॥
त्योंत्योंअतिमीठीलगे ज्योंज्योंडीठ्योदेय ५२६ ॥

यह मदपान समय सखी को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ लाजभरी अतिही नवनागरि जाकी सुघाई सुधाईकै गाई । ताहिवकी छवि देखिबे को पिय प्यारे भुराय कै बारुनि छाई ॥ ज्यों ज्यों उमंग उठै मदकी तिय त्योंत्यों निशंक है देत ढिठाई । ढीठ्योही लागत नीकी महा वह मानौ भरी बहुभांति मिठाई ॥ ५२६ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० मानतमासोंकररही बिबशबारुनीसेय ॥
झुकतिहँसतिहँसहँसझुकतिझुकझुकहँसहँसदेय ॥ ५२७ ॥

यह मदपान नायिकाकी शोभा नायक सों कहति है सखी सखीहू सों कहै ॥ कबित्त ॥ बारुनी बिबश मनमोहन सों मानठान आज मृगलोचनि तमासे को लसति है । चारु तरुणाई में निकाई छविछाई त्योंत्यों गोरे मुखपर अरुणाई सरसति है ॥ कबहूं बदन पट घूंघटके ढांकलेत कबहूं उघारिदेत रंग बरसति है । झुकति हँसति हँस झुकति झुक हँसति हँसि हँसि झुकै झुक झुककै हँसति है ॥ ५२७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रूपसुधाआसवछक्यो आसवपियतबनैन ॥
प्यालेओठपियाबदन रह्योलगायेनैन ॥ ५२८ ॥

यह मदपान समय नायिका की शोभा देखि नायक छक रह्यो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बारुनी को बनिआयो समो कहते न बनै कछु कौतुक भारो । प्यावत रंगभरी मृगनैनि रह्यो द्युति को भरि भौन उजारो ॥ आस-

वरूप सुधाकै छक्यो मद पीवेको भूलिगयो सुखिप्यारो। प्याले सों ओठ पियामुख नैन लगाये रह्यो छविको मतवारो॥ ५२८॥ मच्छ अच्चर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० खलितबचनअधखुलितदृगललितस्वेदकनजोति॥
अरुणबदनछबिमदछकी खरीछबीलीहोति ५२९॥

यह मदपान समय नायिकाकी शोभा सखी सखीसों कहति है॥ सवैया॥ नैन कछू उघरे से मुँदे अरु बैननमें शिथिलाई रसीली। स्वेदके बूंदनसों झलकै अरुणद्युति आनन पै चटकीली॥ तैसी ये रूप उजागरि नागरि सोहत शोभासनी गरबीली। चारुजगी तन यौबनजोति छकैं मद होत खरी ये छबीली॥ ५२९॥ पयोधर अच्चर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० छकिरसालसौरभसने मधुपमाधुरीगंध॥
ठौरठौरझोरतझपत भौंरभीरमधुअंध॥ ५३०॥

यह बसन्तऋतु समय जो मानवती नायकसों सखी कहै तो मनायबो होय जो नायिका नायकसों कहै स्वयंदूतहोय ऐसे नायकहू को कहिबो सम्भव है जो नायक सखीसों कहै तो अपनी अवस्था प्रयोजन नायिका मिलाप॥ सवैया॥ फूलनके रसके चसके अवगाहि थके सब बेलि जितावन। माधुरी के मृदुगन्ध सने अरविन्द पराग सों पागिरहै तन॥ मंजुरसाल के सौरभ सों मिलमत्त भये सुरत्यों न रहीमन। ठौरनि ठौरनि झोरनि झूमि झुके मधुअंध मधूव्रत के गन॥ ५३०॥ वारन अच्चर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० फिरघरकोनूतनपथिक चलेचकितचितभागि॥
फूल्योदेखपलाशबन समुहीसमुझदवागि ५३१॥

यह बसन्त समय नायिका को बचन नायिका सों होय तो प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सों होय॥ कवित्त॥ देखो ऋतुराज को समाज बन बागन में प्रफुलित सुमन रहे हैं जोति जागिकै। कुसुम पलाश के अंगार जानि चहूं ओर चोंचन सों चापत चकोर अनुरागिकै॥ आगे तैं बिलोकि फूले मैनमद चित ऊले नूतन पथिक भूले भरम दवागिकै। परी उरऐल परदेशकी बिसारी गैल लौटि चले घरको चकित चित भागिकै॥ ५३१॥ कच्छ अच्चर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० बनबोटनपिकबटपरा लखिबिरहनिमतिमैन॥

कुहौकुहौकरिकरिउठत करिकिरिरातेनैन॥५३२॥

यह बसन्त समय सखी को वचन सखीसों होय तो अपनी अवस्था जतायबो होय ॥ सवैया ॥ मैन महीप को मानिमतौ द्रुमडारि चढ़े चहुँ ओरनि दूकत। देखतही बिरहीजन को करि लोचनलाल कुहो कुहो कूकत॥ बीसबिसे बन बाटनमें बटपार बसे पिक भूलत कूकत। प्राणपती बिन क्यों बचिबो अब दांवपरे रिपु क्यों टुक चूकत ॥ ५३२ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० दिशिदिशिकुसुमितदेखियतउपबनबिपिनसमाज॥
मनोबियोगिनकोकियो शरपंजरऋतुराज ५३३॥

यह बसन्त समय है सखी को वचन नायकसों होय तो मनायबो नायकसों होय तो प्रबत्स्यत्पतिका ॥ कवित्त ॥ आयो है मदन क्षितिपाल को हुकुम पाइ आमल प्रबल ऐसो अमल चलायो है। मानगढ़ तोरिबे को अधिक प्रचण्ड वह देखो सबहीके अनुराग उमगायो है ॥ बन उपबन जित तित अवलोकियत दिशि दिशि कुसुम समूह छबिछायो है। बैरसाधि विषम बियोगिनके रोकिबे को मानों ऋतुराज शरपंजर बनायो है ॥ ५३३ ॥ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० हीऔरैसीह्वैरही टरीअवधिकेनाम ॥
दूजेकरडारीखरी बोरीबौरेआम ॥ ५३४ ॥

यह बसन्त समय नायिकाकी अवस्था सखी नायकसों कहति है सखी सखीहू सों कहै ॥ सवैया ॥ मोहन सों बिछुरी जबते तबते न लही कल एक घरी है। नैनन नीरढरै निशिबासर व्याकुल बाल अचेत खरी है ॥ ऐसीदशा पहलेही हुती पुन औरैभई सुधि औधिटरी है। तापर बोर रसालन देख्यो बसन्त के मोसरबोरी करी है ॥ ५३४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० कहिलोनेयेकतबसत अहिमयूरमृगबाघ ॥
जगततपोबनसोंकियो दीरघदाघनिदाघ ५३५॥

यह ग्रीष्म समय नायिकाको वचन नायकसों हेठ अतो प्रबत्स्यत्पतिका सखी को वचन नायकसों नायकहू सों होय ॥ षट्पद ॥ एक भूतमय होत भूत तजि पंचभूत भ्रम। अनिल अंबु आकाश अवनि ह्वैजात आगिसम ॥ पंथ थकित मद मुकति सुखित सिन्धुरस जोवत। काकोदर करिकोस उदरतर केहरि सोवत ॥ प्रिय प्रबल जिय यह बिधि अचल सकल बिकल जलथल रहत। तजि केशवदास

उदासमति जेठमास जेठे कहत॥ ५३५ ॥ पयोधर अक्षर ३८ गुरु १२ लघु २६ ॥

दो० बैठिरहीअतिसघनबन पैठसदनतनमांह॥
देखदुपहरीजेठकी छाहौंचाहतछांह॥ ५३६ ॥

यह ग्रीष्म समय नायिकाको बचन नायकसों स्वयंदूत ऐसे नायकको बचन नायिका सों जो नायिका की सखी नायकसों कहै तो प्रदेश को निवारण होय ॥ कबित्त ।।तरवर लता बन ऐसे मुरझाय गये जैसे कामिनी को मुख कंत बिन भयो है। सरिताभई है छीन ऐसे सरजलहीन प्यारीदीन होती जो बिदेशपति गयो है॥ अवनि अकाशपानी नाहबिन ऐसे जैसे नाहके बियोग भामिनी ज्यों तन तयो है। जेठकी जरनि मांह छांहहुतिकाति छांह एहो रिझवार परदेश को गयोहै॥५३६॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नाहिंनयेपावकप्रबल लुवैंचलतचहुँपास॥
मानहुँबिरहबसंतके ग्रीषमलेतउसास॥ ५३७॥

यह ग्रीष्मसमय नायिका प्रोषितपतिका नायिकाको बचन सखीसों ॥ कबित्त॥ चन्दकर मंडलते मंडके अखंडधार बरषत पावक प्रचंड किधौं यहरी। कृष्ण प्राण प्यारे की दुहाई किधौं आय बड़वानलकी लूवैं ताते तचति दुपहरी॥ चंडकर मंडलीते पावकन बरषत लूवैं नचलत जिन्हैं देखमतहहरी। मेरे जान प्रीतम बसन्त के बियोगभये ग्रीषम बिरहनी उसासे लेत गहरी॥ ५३७॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लैचुभकीचलजातजित तितजलकेलिअधीर॥
कीजतकेशरनीरसे तिततित केशरनीर॥५३८॥

यह जलकेलि सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया॥ मोहन सों जलकेलि रची वृषभानुसुताहि तरंगमें बोरी। कृष्ण कहै कविता छविपै रतिकामकी वारौं करोरि क जोरी॥ चूभकलै महरै जलहू चलिकै जितही जितजात किशोरी। केशरि के तल केशरि केशरि नीर करै तितही तितगोरी॥ ५३८ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० प्रावसघनअँधियारमहि रह्यो भेदनहिं आन॥
रातद्योसजान्योपरत लखिचकईचकवान ५३९॥

यह बर्षा समय स्वयंदूत नायक को बचन नायिका प्रति नायिका को बचन

है । चपकै मृगलोचनि केलिभरी लचकै कटियों जनु टूटति है ॥ ५४६ ॥ चल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घनघेरोछुटिगोहरषि चलीचहूंदिशराह ॥
कियोसुचैनौआइजग शरदशूरनरनाह ॥ ५४७ ॥

यह शरद समय राजनीति प्रसंग कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ छुटि गयो व्रजनु चलनु अपमारग को अपने अपने सतमारग समीति है । सोहत परम हंस शूर शुभ कलानिधि गाइद्विज देवतानि पूजिबे की प्रीति है ॥ केशवराय सबहीके हृदय कमल फूले सोहत शरद किधौं आछी राजनीति है ॥ ५४७ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० अरुणसरोरुहकरचरन दृगखंजनमुखचंद ॥
समयआयसुन्दरशरदकाहिनकरतअमंद ५४८ ॥

यह शरदसमय कविकी उक्ति है ॥ कवित्त ॥ सोहत अरुण सरसीरुह चरण करि जिनहिं जगतश्रिय तदनपनावई । कलापरिपूरण सुधानिधि बदन लसै जाकी अद्भुत छबि कहत न आवई ॥ देखियत खञ्जन तरल कजरारे नैन कहैं कविकृष्ण देखि जीव सचुपावई । समय सुखपुञ्ज सनी सुन्दर शरद आई कौन के न उर में अनन्द सरसावई ॥ ५४८ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० कियोसबैजग कामबश जातेजिते अजेय ॥
कुसुमशरहिशरधनुषकरि अगहनुगहननदेय ५४९

यह हेमन्त समय कामोद्दीपन अधिक होताहै सुनायक अथवा नायिका सखीसों कहै ऐसोही सखीको बचनहूं सम्भवहै कविकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ शृंगीसे मुनीश सिद्ध ईश शतक्रतु केसे केते कीने विकल गनैये कहौ काहि काहि । मानियत जाको नउखण्डमें अखण्डधाकु जीते महिमण्डलके अजित जितीक आहि ॥ कहै कविकृष्ण जिन फूलही के आयुधसों कैसे कैसे बली भेदे साहसुईते कुचाहि । जीते जिहि तीनोंलोक ऐसो बली मनमथ अगहन गहन न देत शरचापताहि ॥ ५४९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० ज्योंज्योंबढ़तिबिभावरी त्योंत्योंबढ़तअनन्त ॥
ओकओकसबलोकसुखकोसकोसहेमन्त ॥ ५५० ॥

यह हेमन्त समय कवि की उक्ति मुख्य है संयोग शृंगार में बनै विप्र लम्भहू

में कोक कोशको प्रसंग अन्योक्तिहू जानिये॥ कवित्त॥ हिमऋतु आइभई शीतसर-सायु देखि भाजिगई गरम उरोज अचलनमें। बासरकी लघुता बिलोकि मुरझात कौल सुछिम है रह्यो तेज तपनके तनमें॥ कहै कविकृष्ण ज्यों ज्यों रजनी बढ़त त्यों त्यों उमगत मोद अनुरागिन के मनमें। लोक लोक बाढ़त अपार सुख देखियत शोकहै बियोगी कैकि कोकनके मनमें॥ ५५०॥ मदकल अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० मिलिबिहरतबिछुरतमरतदम्पतिअतिसरलीन॥
नूतनविधि हेमन्त सब जबै जुराफाकीन॥ ५५१॥

यह हेमन्तसमय सखीको वचन नायिकासों होय तो मानवती और कविको उक्तिहोय॥ कवित्त॥ दोऊ येकै देखिये दुहून बीच येकै प्राण हितकी उमंग नई नई ये गहत है। अतिरस लीन दोऊ मिलैं ही बिहार करैं कहैं कविकृष्ण चित अति उमगतहै॥ बिछुरे न नेकहू तो जीबेको भरोसो नाहिं अति अकुलाय मैन बिथा न सहतहै। और एक देखो हिमऋतुकी नवल रीति जगतमें सबही जुराफाहू रहतहै॥ ५५१॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० आवतजातनजानियत तेजहितजि सिवरान॥
घरहि जमाईलौं घट्यो खरोपूषदिनमान॥ ५५२॥

यह शिशिरसमय दोउनकी हितकाई है सुरतिही आछी लगतिहै सो सखी दिनकी लघुता कहति है बिरहीहू दिनकी निन्दाकरै॥ कवित्त॥ बावनकी दगहै बिभावरी बढ़त ज्योंहीं त्योंहीं त्यों बियोगिनको हियो अकुलातहै। दम्पति उमंग अनुरागनि झिलवबर एक है रहत मिलि दुहुनको गातहै॥ पूषकी दिवस लघुमानभयो ऐसे जैसे ससुरके घरमें जमाई सकुचातहै। तेज को न लेश रह्यो शीतल सुभाव भयो जानत न कोउ कब आयो कब जातहै॥ ५५२॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ६ लघु ३०॥

दो० रहनसकी सब जगतमें शिशिरशीतके त्रास॥
गरमभाजिगढ़वैभईतियकुचअचलमवास ५५३॥

कवित्त॥ सूरैतजि भाजौ बात कातिकमें जब सुनी हिमकी हिमाचलतें चमूउतरति है। आये अगहन कीनो गहन दहनहूकी तितहूतें चलो कहूं धीर न धरतिहै॥ हियमें परीहै हूल दौरि गहि तजितूल अब निजमूल सेनापति सुमिरति

है। पूरब में तियाके कुच ऊँचे कनकाचल नगरमगढौई भई शीतसों लरति है॥ ५५३॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

**दो०तपनतेज तपतातपति अतुलतुलाई माह॥
शिशिरशीतक्यौंहुनघटैबिनलपटेतियनाह॥५५४॥**

यह शिशिरऋतु सखीको बचन नायिका सों नायकको बचन सखीसों॥ सवैया॥ मोलविशालकी ओढ़हुलास दिनेश को तेज इते परहोऊ। रावहुबाड़ निहालिनुमें तन पावक पुंज अँगीठी संजोऊ॥ माहको शीत बिहात न कैसेहू कोटि उपायकरौ किन कोऊ। जौलग पीवपिया सचुपाय रहै लपटाय न एक है दोऊ॥ ५५४॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

**दो०लगतसुभगशीतलकिरनिनिशिसुखदितअवगाहि॥
माहशशीभ्रम सूरत्यों रहतचकोरै चाहि॥५५५॥**

यह शिशिरऋतु कवि कविकी उक्ति मुख्यहै॥ कवित्त॥ शिशिर में शशि को स्वरूप पावै सविता सुघामहूं में चांदनीकी द्युति दमकति है। सेनापति होत शीतलता है सहसगुनी रजनीकी बासर में झाई झलकति है॥ चाहत चकोर सूर ओर दृग छोरकरि चकवाकी छातीतजि धीर धसकति है। चन्दके भरम होतु मोदहै कुमोदनी को शशि शङ्क पङ्कजनी फूली पै रहति है॥ ५५५॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

**दो० दियोजुपियलखिचखनमें खेलतफागखियाल॥
बाढ़तहू अतिपीरसुनिकाढ़तबनतगुलाल॥५५६॥**

सवैया॥ हरिखेलत फाग बधूगणमें घस बासन केसरिरंग सनै। इत चाँहभरी वृषभानुसुता उमग्यो हरिके उत मोदघनै॥ जब नैननमें तकि डाख्यो लला अपने करसों बहरायघनै। अति बाढ़त है जऊ पीर तऊ वह काढ़त पैन गुलाल बनै॥ ५५६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

**दो० पीठदियेहीनेकमुरि करिघूंघटपटटारि॥
भरिगुलालकीमूठसों गईमूठिसीमारि॥५५७॥**

यह होरी खेलने को समय नायिका की शोभा नायक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ मोपै कछू कहते न बनै कारि जैसी दशा ब्रजनारिगई है। पीठि दियेही मुरी मचलै वह फागन खेलि खिलारगई है॥ घूंघट को पटटारिकै भौंह उसारिकै

नेक निहारिगई है। यों भरि मूठिगुलालसोंप्यारी अचानक मूठिसी मारिगई है ५५७॥

दो० ज्योंज्योंपटझटकतिहँसति हठतिनचावतिनैन॥
त्योंत्योंनिपटउदारहू फगवादेत बनैन॥ ५५८॥

यह नायिका मौंदाहोरी खेलको समाज नायककी शोभा देखिबेको लोभ लाग्यो है सो सखी सखीसों कहति है॥ कबित्त॥ फागुन के खेलको समाज बनिआयो जैसो तैसो एक रसना सों कहत बनै न है। सांकरीगली में नंदलाल कोपकरि बाल मन भाये करत बढ़ावै चित चैनहै॥ ज्यों ज्यों नेहचाह भरि लोचन नचाय पटु फटकि कहत हँसि हँसि मृदुबैनहै। त्यों त्यों चित्त लालनको निपट उदारतऊ फगवाको देबो क्योंहू मानतु मनै न है॥ ५५८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ६ लघु ३०॥

दो० छुटतमुठिनसँगहीछुटे लोकलाजकुलचाल॥
लगतदुहुनइकबेरही चलचितुनैनगुलाल॥५५९॥

यह होरी खेलको समय सखी सखीसों कहति है॥ कबित्त॥ होरी को समाज बरसाने को बगर आजु कहा कहौं आली बनिआयो नीको ख्यालरी। इत युवतीगणमें राधिका किशोरी उत सहित सखान बन्यो मदन गुपालरी॥ छुवत मुठी के संग छूटतहै एके बेर गुरुजन उरलोकलाज कुलचालरी। कहैं कबिकृष्ण त्योंहीं लागत दुहूके तन एकैसाथ चायचित लोचन गुलालरी॥५५९॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० ज्योंज्योंझुकिझांपतबदन बिहँसतअतिसतराय॥
तुक्योंगुलालमुठीझुठीझिझकावतप्योजाय५६०॥

यह होरी खेलत नायिका की चेष्टा देखि नायक रीझ्यो है सो नायक युक्ति करत है सो सखी सखीसों कहति है॥ कबित्त॥ आज ब्रज देख्यो होरी खेल को समाज वह शोभा मेरे नयन में रही है बिहरिकै। राधा बनमालीको बिलास लखिआली सच मघवाके कोरिकै गुमान जातगरिकै॥ ज्यों ज्यों प्यारी झुकि झुकि झांपत बदन बिहँसत सतरात रिसकोसो रुखकरिकै। त्यों त्यों छबि देखि छक्यो कृष्ण प्राणप्यारोलाल झिझकावत गुलाल मूठी झूठी भरि भरिकै॥ ५६०॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० रिसभिंजयेदोऊदुहुन तौटिकरहेटरैन॥

छबिसोंछिरकतप्रेमरँग भरि पिचकारीनैन५६१॥

यह दोउन को परस्परावलोकन है सो सखी सखीसों होरीके ख्याल की समता देकरि कहति है ॥ कवित्त ॥ आज बृषभान की कुंवारी मनमोहन को नैनन में राख्यो होरी कोसो ख्याल करिकै । भरे हितचाय कोऊ चूकतनदाय ढिकरहै टकलाय कोऊ जानत न टरिकै ॥ भिजयेवनाय अतिरसमें परसपागे अनुराग के गुलाल रंग ढरिढरिकै । कृष्णकहैं छिरकत छबिसों छबीले दोऊ नैन पिचकारी प्रेमरंग भरिभरिकै ॥ ५६१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गिरेकंपकछुकछुरहैं करुपसीजलपटाय ॥
लैयोंमुठीगुलालभरि छुटतझुठीह्वैजाय ॥ ५६२ ॥

यह होरी खेलको समय सखी सखीसों कहति है दोउन के सात्त्विकभाव कंपन है ॥ कवित्त ॥ मेरी कह्योमानरी उताली चलि देखि नेकु आज ब्रजभूप होरी खेलकी अनूठी है । केसरिसोंसने रस रसिक रसीले जहां बरषा तहांई सब सुखन अँगूठी है ॥ यद्यपि परसपर दोऊ मुखमांढिबे को लेइअति चायसों गुलाल भरि मूठी है । कछू कर पंकज पसीजै लपटात कछू कांपैगिरीजात तातें खोले होत झूठी है ॥ ५६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहीरुकीक्योंहूंसुचलि आधिकरातिपधारि ॥
हरिततापसबद्योसको उरलगियारिबयारि ५६३॥

यह बायु वर्णन कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ ऐसीरही रुकि क्योंहों आवने न पायोजाके बिनमिले प्राननकी गति अकुलातिहै । लोचन चकित जाको आगम बिलोकिबे को चहूंओर चितवत छाती होत तातिहै ॥ क्योंहूं क्योंहूं चलिकै अचानकही आधीराति आयगई ब्यार जैसे पारिआयी जाति है । हरित तपति सब द्योसकी हियेसों लागि कहैं कविकृष्ण सुखसिंधु सरसाति है ॥ ५६३ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चुवतस्वेदमकरंदकण तरुतरुतरबिरमाय ॥
आवतदक्षिणतेंचल्यो थक्योबटोहीबाय॥५६४॥

यह पवन वर्णन कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ नीझर तड़ाग जलयंत्रनके बिमल सलिल परसत ऐसे ढार सों ढरेंढरें । कृष्ण कहैं जहां तहां सीरी छांह देखि देखि बिरमि रहत तरुतरुके तरेंतरें । सुमन पराग रज पागि रह्यो अंग

अंग स्वेदकण बूंद मकरंदके धरें धरें। सुरभि समूह छाक्यो दक्षिण दिशातें बायु थाक्यों सौं बटोहीचल्योआवतहरेंहरें॥५६४॥ कच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो॰ बिकसतनवमल्लीकुसुमनिकसतपरमलपाय॥
परसियजारतबिरहहियबरसरहेकीबाय॥५६५॥

यह पवन वर्णन बिरह के प्रसंग में नायिका अथवा नायक सखीसों कहै है मान के प्रसंग में सखी नायकसों कहै॥ कवित्त॥ मञ्जु लता बेलिनके सघन निकुंजनितें हरे हरे निकसत सबही सुहातहैं। सुमन कदंबनिके सुखद परागराग सनि जाहिं मिलि भौंर पांति हुलसाति है॥ मुकुलित मालिका के कुसुम सनि बीनेंनुते निकसाति सुरभि सहित सरसाति है। बरसि रहेकी सीरी आवत बयारि देखो परसहिये जरत बियोगिन की छाति है॥ ५६५॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो॰ रुक्योसांकरेकुंजमगकरतझांझिझुकरात॥
मंदमंदमारुततुरँगखूदिनआवतजात॥५६६॥

यह बायुबर्णन॥ कवित्त॥ सोहत शृंगार बहुभांतिन जराव साज रंगरंगकुसुम तरल अतिअंगुहै। करिकाललित भ्रमरावली लसति मुख पुहुपपराग ढक्यो उमंग अनंगुहै॥ झझकत सांकरे निकुंज मग निरखतु झांझली करत भरयो ककैरात रंगुहै। खुदीसी करत मंद मंद मलयाचलते आवत पवन कामदेव को तुरंगु है॥ ५६६॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो॰ लपटीपुहुपपरागपट सनीस्वेदमकरंद॥
आवतनारिनवोढ़लों सुखदवायगतिमंद॥५६७॥

यह बन वर्णन कविकी उक्ति॥ सवैया॥ फूलनकी रज अम्बर में नखते सिखलों लपटी छबि छावति। स्वेदलसे मकरन्द फुही लगि नयननसों छतियांहि सिरावति॥ कृष्ण कहैं बहुभांतिनुकै तनसों रस चौंहूं दिशा महकावति। मन्दगहें गति नारि नबोढ़लो ब्यारिन कुञ्जगली तन आवति॥ ५६७॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो॰ रणितभृंगघंटावली झरतदानमदनीर॥
मंदमंदआवतचल्यो कुंजरकुंजसमीर॥५६८॥

यह बायु बर्णन कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ चंदन के शबद अखण्ड तेई

सुनियत गुंजत अनंद भरयो अलिनको वृंद हैं। सुमन समूहन की धूरसों धूरे गात मद जल उमगि झरत मकरंद हैं॥ रंगरंग फलनकी झूल में झपाये तन जगत विरनिया को विक्रम अमंद हैं। मान तरु तोरि केका आवत गुमान भरयो मंद गति पावनु मनोजको गयंदहैं॥ ५६८॥ मराल अक्षर ३४गुरु१४लघु २०॥

दो० चंद्रोदयद्वैजसुधादीधितिकलाबहलखिडीठिलगाय मनोअकाशअगस्तियाएकैंकलीलखाय॥ ५६९॥

यह चन्द्रोदय वर्णन सखी को बचन नायिकासों अगरितया के तरु तें संकेत स्थल सूचन द्विजते मिलिबे की अवधि सूचनसाधारते कबिकी उक्ति॥ सवैया॥ देखतवै दुतियाके मयंककी कैसी कला नभज्योति जगी है। सो छबि चाहि चकोरनकी अवली हुलसी हिय मोद पगीहै॥ यों निरखी अरुणाई लिये उपमा कबिके उरमें उमगी है। मानहुंव्योम अगस्तिके रूपहि एककली पहलेही लगी है॥ ५६९॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० धनियहद्वैजजहांलख्यो तज्योदृगनदुखदंद॥ तोभागनपूरबउयो अहेअपूरबचंद॥ ५७०॥

यह चन्द्रोदय सखीको बचन नायकसों प्रयोजन नायिका दिखायबो अन्योक्तहू याही प्रसंग में संभव है॥ कबित्त॥ सकल कलानि परिपूरण पियूषनिधि सोहै अकलंक सब सुखनि को कंद है। जाहि देखि बारिज बदन और तियनके सकुचि मुदित ऐसी प्रभाको अमंदहै॥ धनि यह द्वैज जहां नीकेकै निरखि पायो देखतही दृगनिको गये दुखद्वंदहै। पूरबकी ओर तुव पूरब सुकृत फल निरखि अपूरब उदित भयो चंदहै॥ ५७०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० शीशमुकुटकटिकाछनी करमुरलीउरमाल॥ यहिबानिकमोमनसदा बसौबिहारीलाल॥ ५७१॥

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान है कि या बानिक सों मेरे हृदय में बसो॥ सवैया॥ छबिसों कबि शीश किरीट बन्यो सुबिशाल हिये बनमाल लसैं। करकंजहिं मंजुरली मुरली कछनी कटि चारु प्रभाव बसैं॥ कबि कृष्णकहैं लखि सुन्दर मूरति यों अभिलाष हिये सरसैं। वह नन्दकिशोर बिहारसदा यह बानिक मोहिय मांझ बसैं॥ ५७१॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० मोरमुकुटकीचंद्रकनि योंराजतनँदनन्द ॥
मनुशशिशेखरकीअकसकियशेखरशतचन्द ५७२

यह श्रीकृष्णजूकी मुकुटकी शोभा सखी को वचन नायिकासों भक्तको वचन हूं सम्भव है ॥ सवैया ॥ आज लख्यो ब्रजराजकुमार सुदेश शृंगार बने सिगरे हैं। रूपकी रीझ कहीं न परै अवलोक विलोचन मोदभरे हैं ॥ कृष्ण कहैं शिर सोहत मोर किरीट चँदा छविपुंजभरे हैं। अकसमनों शशिशेखरसों हर शेखर चंद अनेक करे हैं ॥ ५७२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० अधरधरतहरिकेपरत ओठदीठिपटजोति ॥
हरितबांसकीबांसुरी इंद्रधनुषरँगहोति ॥ ५७३ ॥

यह श्रीकृष्णजूकी मुरली बजावति शोभा होतहै सो सखी नायकसों कहति है नायिका सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ चलिदेखिरी बानिकसों बनिकै ब्रजराज को लाड़िलो आवत है। मुखचंदके चारु मरीचिनसों बलि नैन चकोर सिरावतहै ॥ जब दीठिकी ओठनको पटको मुसक्यानको रंग मिलावत है। तब बांसुरी बांस हरे की लला सुरचापके रंग दिखावतहै ॥ ५७३ ॥पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु२४॥

दो० मकराकृत गोपाल के शोभितकुंडलकान ॥
मनोधस्योहियघरसमरु ड्योढ़ीलसतनिशान ५७४

यह कृष्णजू को ध्यान है तरुणाई आई हृदयमें कंदर्प प्रवेश भयो यह प्रयोजन ॥ सवैया ॥ मैं निरख्यो ब्रजरालला द्युतिपुंज हिये हित साजिरहे हैं। कृष्ण कहैं दृगदीरघ देखि प्रभातके पंकज लाजि रहे हैं ॥ मंजुल कानन में मकराकृत कुण्डल यों छबि छाजिरहे हैं। मानों मनोज धस्यो हिय मन्दिर द्वार निशान बिराजरहे हैं ॥ ५७४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सोहतओढ़ेपीतपट श्यामसलोनेगात ॥
मनोनीलमणिशैलपरआतपपस्योप्रभात ॥ ५७५ ॥

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान पीतांबर की शोभा नायिका को वचन सखीसों सखी को वचन नायिकासों भक्त को वचन ॥ सवैया ॥ बनिजा छबिसों हरि नैननमें अरु माननमें अवरोहत है। सखि सुन्दर श्याम कलेवरपै पटपीत लसै मन मोहत है ॥ समता कहता छवि को कहिये सुकियो तिहूंलोक में कोहतु है।

मणि नीलके शैल के ऊपर मानो प्रभातको आतप सोहतु है ॥ ५७५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ भक्तको वचन ॥ उपालंभ ॥

दो० कबकोटेरतदीनरट होत न श्यामसहाय ॥
तुमहूंलागीजगतगुरु जगनायकजगबाय ॥ ५७६ ॥

यह भक्त वचन भगवान्सों ॥ सवैया ॥ हौं कबकी रटलागि रह्यो गहि दीन सुभाव मनो बचकायक। दीनके बंधु कहावतहौ हरि काहेते होत न आनि सहायक ॥ काहेते ढीलकरो करुणामय कृष्णकहै प्रभुहो सब लायक। जानिपरी तुमहूंको कछू अबब्यारलगी जगकी जगनायक ॥ ५७६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० नीकी दईअनाकनी फीकीपरींगुहारि ॥
मनीतज्योतारनबिरद बारकबारनतारि ॥ ५७७ ॥

यह भक्तको वचन भगवान्सों ॥ कवित्त ॥ सेवकको संकट निवारिबे को सावधान कहत तिहारोबेद बिरद पुकारिकै। कहैं कबि कृष्ण त्योंहीं देखपरति स्वसाखदीननु को दीने हैं अनेक दुख टारिकै ॥ अनाकनी नीकीकरि मेरीरट फीकी परी लगे न गुहारिरहे निठुराय धारिकै। जानियतु तारिबे को प्रण अब छांड्यो तुम जस जीत्यो एकबेर बारणको सुतारिकै ॥ ५७७ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० बंधुभयेकादीनके कोतार्‍यो रघुराय ॥
तूठेतूठेफिरतहौ झूठेबिरदकहाय ॥ ५७८ ॥

यह भक्तको वचन भगवान् सों ॥ सवैया ॥ कौनसे दीनपै कीनीदया अपराधी कहो जग कौन उधार्‍यो। कौन अनाथके बंधुभये प्रभु को तुम दासभये बिन तार्‍यो ॥ ऐसेई कैसे प्रतीत करौं कबिकृष्ण कहै हैं पुकारिकै हार्‍यो। तूठेई तूठे निसांक फिरौ तुम झूठेई धाकुअनाकह पार्‍यो ॥ ५७८ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० थोरेईगुनरीझते बिसराई वहबानि ॥
तुमहूंकान्हमनोभये आजकालिहकेदानि ॥ ५७९ ॥

यह भक्तको वचन भगवान सों ॥ सवैया ॥ है अतिआरत मैं बिनती बहु बारकरी करुणारसभीनी। कृष्ण कृपानिधि दीनके बंधु सुनी असुनी तुम काहे कौं कीनी ॥ रीझते रंचकही गुनसों वह बानि बिसारि मनो अबदीनी। जानिपरी

तुमहूं प्रभुजू कलिकाल के दानिनकी गतिलीनी ॥ ५७९ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० ज्योंह्वैहोत्योंहोयगौ होहरिअपनीचाल ॥
हठनकरौअतिकठिनहै मोतारिबोगुपाल ५८० ॥

यह भक्तको वचन है अपनो पापकरिवेको पनु उपालंभसों करत है ॥ सवैया॥ हौं उनकी गिनतीनमें हो प्रभु जे तुम तारेते आपनी गौहीं। कृष्ण कहै गिनते न बनै कछु पापिनकी परमावधिहौहीं ॥ होनीहै जो कछू ह्वैहै वहै गति मेरी ये चाल कुचालन सोहीं। खेलन है प्रभु मेरो उधारिबो भूलि न कीजै वृथा हठ योहीं॥ ५८० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहितुमेंबाढ़ीबहस कोजीतैब्रजराज ॥
अपने अपनेबिरदकी दुहूनिबाहनलाज ॥ ५८१॥

यह भक्तको वचन भगवान् सों ॥ कवित्त ॥ तुम जेते तारे तेते मोते न पतितभारे मोसों पूरो पापी कोऊ दूसरो न पेखिये। तुम्हैं बानपरी प्रभु अधम उधारिवे की मेरे एक पापहीकी टेकअवरेखिये ॥ दुहुनको लाज आप आपने बिरदकी है पूरी पैजपारिकै निबाहनी बिशेखिये। कहैं कविकृष्ण मोसों तुम सों बहस बाढ़ी को न चलिजाय अब जीते कौन देखिये ॥ ५८१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कौनभांतिरहिहैबिरद अबदेखिबीमुरारि ॥
बीधेमोसोंआनिकै गीधेगीधहितारि ॥ ५८२ ॥

यह भक्त को वचन भगवान् सों ॥ कवित्त ॥ पतित उधारन कहत सब कोऊ सोऊ सांच झूंठ अब ठहराय गौ बनायकै। कहैं कवि कृष्ण जिन औरके सरम भूलौ हौं गरू पापी मन बच अरु कायकै ॥ तारयो है पखेरू एक गीध ताते गीधे तुम सोही यशराख्यो है जगत बगरायकै। कौनभांति राखिहौ बिहारि अब देखिये जू कठिन बनी है अब गीधे मोसों आयकै ॥ ५८२ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

सो० मोहूंदीजेमोष ज्योंअनेक अधमनदयो ॥
ज्योंबांधेहीतोष त्योंबांधे अपनेगुनन ॥ ५८३ ॥

यह भक्तको वचन भगवान् सों कि मुक्तकरौ बांध राखो तो अपनो करि

राखो ॥ कबित्त ॥ भांति भांति आरतकी आरति निवारत हौं प्रकट पुकारत निगमगण साखिये । तातें कबिकृष्ण दीनबंधु दयासिंधुजू सों बारबार बिनती पुकारि यह भाखिये ॥ अधम अनेकन को ज्योंही दीनी मुक्तिभूम त्योंही मोहूं मोक्ष देवो चित्त अभिलाखिये । बांधवोई जोपै मनमान्यौ महाराज तो जू आपनेही गुनन बनाय बांधि राखिये ॥ ५८३ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० निजकरनीसकुचेहिंकत सकुचावतइहचाल ॥
मोहूंसेनितबिमुखत्यों सनमुखरहिगोपाल५८४॥

यह भक्तको वचन अपनी बिमुखता भगवान्‌की भक्तिनसों सम्मुख रहिबे को पनु सुप्रकट करत है ॥ सवैया ॥ जानिपरै न तिहारी प्रभू गति वेदहू नीके भेद न पावत । संगफिरै ब्रजग्वालनिके मुनि पावैं न ध्यान समाधि लगावत । एकतो हौं अपनी करतूत नहीं सकुच्यो बहुरयो सकुचावत । हूं तुमसों नितही बिमुखे तुम दीनदयालुहो सम्मुख आवत ॥ ५८४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाहगरजनाहरगरज बोलसुनायोटेरि ॥
फँसीफौजमेंबंदबिच हँसीसबनतनुहेरि॥ ५८५॥

यह द्रौपदी को समय कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ आयुध अघट साजै भटन की भीर भारी चारोओर बिकटलियेई जाति घेरिकै । नाहरकी गरज गरूरसों गरजियत ताहीसमय पाछेते सुनायो बोल टेरिकै ॥ वाके अतिबिक्रम को भाव जियजान्यो यह जीतेगो समर एक एक को निबेरिकै । प्रबल चमूक बीच मन्द में फँसीहै तऊ उमँगि उछाहसी है सब बन हेरिकै ॥ ५८५ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० नहिंपावसऋतुराजयह तजितरुवरमतिभूल ॥
अपतभयेबिनपाइहै कोनवदलफलफूल । ५८६॥

यह अन्योक्ति काहू दाताके योग्य सूमपै कछू कोऊ चाहै तहां कहिये झगरे के प्रसंग में गढ़हू के प्रसंग में ॥ कबित्त ॥ मघवा के जलसों उमँगि अधिकानो बहु पक्षिन को राख्योते बसाय समुदाई हैं । छोंड़िचित्त भूलि वा भरोसे मत भूलै अब वैसी तो बनिक नीठि नीठि बनिआई है ॥ पावस न जानि ऋतुराजको समाज यह योंही कैसे हरित भरित छबिछाई है । सुनि तरुवर जौलों ह्वैहै न अयत तौलौं नवदल फूलफल सम्पति न पाईहै ॥ ५८६ ॥ पयोधरअक्षर ३६गुरु १२ लघु२४॥

दो० कोछूट्योयहजालपरि कतकुलंगअकुलात ॥
ज्योंज्योंसुरझिभज्योचहत त्योंत्योंउरझतजात ५८७

यह अन्योक्ति संसारजाल अथवा प्रेमजाल के बन्धन सों कहिये ॥ कवित्त ॥ तबतो न जान्योलागि लालच भुलानो चित्त अब परबश पर काहे पछताता है। कहैं कविकृष्ण याके बन्धनकी यहै रीति नेक अटकत अंग अंग बँधिजात है ॥ देख्योंते परेरू कोऊ छूट्यो इहजालपरि काहेकोते बाथरे कुलंग अकुलात है। ज्योंहीज्यों सुरभि भज्यो चाहत सयानकरि त्योंहींत्यों खरोई खरो उरझत जातहै ॥ ५८७ ॥ त्रिकल अक्षर ३१ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० यहद्वैहीमोतीसुगथ तूनथगरबिनिसांक ॥
जेहिपहिरेजगदृगग्रसतिलसतहसतसीनांक ५८८

यह अन्योक्ति कोऊ थोरेहू ते धनसों अथवा गुनसों अधिक सोहत होय तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ स्वर समेत नायिका याहीते कहत मुकतनियुत मुकति पुरी सी दरसति है। कहै कविकृष्ण मनमोहन के मोहिबे को मोहनी की शिक्षामानो शोभा सरसति है ॥ तोहिं पहिरेते जस नयन ग्रसत अति छवि बरसत मानौ नासिका हँसति है। अहे नाथ उरमें निसांक तू गरबकरि द्वैही मुकताके गथ सहित लसति है ॥ ५८८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० बेसरमोतीधरतितुहि कोपूछैकुलजाति ॥
पीबोकरितियअधरकोरसनिधरकदिनराति ५८९

यह अन्योक्ति कोऊ अच्छे कुलते भयो लघु मानस अरु बड़ी ठौर जाय पहुँच्यों तहां कहिये ॥ सवैया ॥ कौन बिना न करै कुल जातिको जीवन आपनोई जगमें मनि। है सबले बड़भागी तुहीं अरु आईहै तेरीही बात भलीबनि ॥ तैंहीं लखो कृत पूरबको फलहै तुही बेसरिके मुकताधनि। द्योस निशा तियको अधरामृत नीके निसांक है पीबोकरै किनि ॥ ५८९ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० पाइतरुणिकुच उच्चपद चिरमिठग्योसबगांव ॥
छुटेठौररहिहैवहै जुहोमोलछबिनांव ॥ ५९० ॥

यह अन्योक्ति लघु मानससों बड़े ठिकाने पहुँच्यो तहां कहिये ॥ सवैया ॥ मोसम मोहिं रटै लघुनाम भई उतपत्ति न उत्तम थानो। कौनेहू भाग लखो घुंघची नवनागरिके कुच उच्च ठिकानो॥ याहीते मोल्यो सबै जगको मन वोही गुमान खरयो

अधिकानो । ठौर छुटे रहिजैहै वही मुखकालिमारंग बजार बिकानो ॥ ५९० ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मोरचंद्रिकाश्यामशिर चढ़िकतकरतिगुमान ॥
लखबीपायनपरलुटति सुनियतराधामान ५९१॥

यह अन्योक्त कोऊ लघु मानस सों बढ़ी ठौरपाय गर्व करे ताको मानभंगहै तो जानिये तहां कहिये ॥ सवैया ॥ घनश्यामने आपने शीशपै राखी बनायकैं चाय-नसों धरिहैं । जिन याको तू जीमें गुमानकरै अबतो सब जोमलखी परि हैं ॥ कहि काहेको मोरकी चन्द्रिका एंड़ि ढिठाईके ढार रही ढरि हैं । बृषभानुकुमारिके मानस में तरवान तरे लुटिबौ करि हैं ॥ ५९१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जिनदिनदेखेवेकुसुम गईसुबीतबहार ॥
अबअलिरहीगुलाबमें अपतकटीलीडार॥५९२॥

यह अन्योक्त कोऊ धनवान् निर्धन भयो होहि तहां धनके लोभी जाकनुकौ कहै तो भ्रमरके संगकरि गति यौवनहूं को कहिबो सम्भवहै ॥ कवित्त ॥ जबहो उदित ऋतुराज को प्रताप तीखो कहै कविकृष्ण जाको बिक्रम अति अपार । तब इत बाटिका न देखे हे सुखद ! मृदु सरस कुसुमभरे अतुल सुगंध भार ॥ उही आश लाग्यो इत आवत चल्यो क्यों अलि वह तो ब्यतीत भई और सर वही बहार । गंध मधु मृदुता पराग को न लेश रह्यो अम्बर अपत गुलाबकी कटीली डार ॥ ५९२ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बहकिबड़ाईआपनी कतराचतमतिभूल ॥
बिनमधुमधुकरकेहिये गड़ेनगुड़हरफूल ॥५९३॥

यह कोऊ गुणहीनहै अरु गर्व अधिक करतहै तासों गुड़हरके फूलको प्रसंगकरि अन्योक्त संभवहै ॥ कवित्त ॥ कहा भयो जोपै पायो सहज अरुण रंग उमंग ललि-त छबिरही तनछाइहै । बहकि बहकि चित आपनो बड़ाई में तू काहेको रचत गु-रुवाई यों न पाइहै ॥ जाहि रसलेबेही को चसको लग्यो है सो क्यों सुमन सुगंध तजि तोपै मड़राइहै । गुड़हर फूल इतरात क्यों तू फूलि फूलि बिन मकरन्द अलि भूलिहू न भाइहै ॥ ५९३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० स्वारथसुकृतश्रमबृथा देखिबिहंगबिचारि ॥
बाजपरायेपाणिपर तूपक्षीहिनमारि ॥ ५९४ ॥

यह अन्योक्त कोऊ पराई खुशामद करि अपने को बुरो कहै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ काहे क्यों बिराने बुरे करत पराये काज ऐसो खोटो करम बिचारतहै काहे को। ये तो भ्रम नाहक शरीर को तू देत अरु दोऊ लोक आपने बिगारतहै काहे को ॥ यामें कछू सुकृत न स्वारथ समुझि देखि पातक को भार शिरधारत है काहे को। कहा भयो जोपै आनि बैठ्योई पराये पाणि बाज निज पत्तिन तू मारत हैं काहेको ॥ ५९४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० जनमजलधिपानिपुबिमल भौजगआधुअपार ॥
रहैगुनीह्वैगरपरयो भले न मुक्ताहार ॥ ५९५ ॥

यह अन्योक्त कोऊ भयातुर है भली ठौर रहवेलायक अरु छोटी ठौर अनादर सों रहै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ जनम जलधि कुलपानिपु बिमल अति तेरी शुभ्र शोभा जगमतिहि सुहाई है। सब कोऊ जगतमें चोंपकरि चाहै तोहिं वैही बेशकीमत जवाहिर में पाई है ॥ तेरो संगपाय छितिपाल औ बालनिकी कैसी नीकी देखियत रूपकी निकाई है। ऐसी तू गुनी है गरेपरिकै रहत सुनि मुकता के हार यामें कहाधौं भलाई है ॥ ५९५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गहैननेकौगुणगरब हँसोसबै संसार ॥
कुचउचपदलालचिरहैं गरेपरेहूहार ॥ ५९६ ॥

यह अन्योक्त कोऊ आछयो गुणी अथवा भलोमानस आपनी गँवजानि छोटीहूजगै अनादरसों रहै ताको कहिवो संभव है ॥ सवैया ॥ छोड़ी बड़े कुलकी पदवी गुणकी गरुवाई न जीमें धरै। क्यों न सबै हँसबोई करौ जग पानिपहूनिहू ते न डरै ॥ हाटन हाट बिकै इह आश बिधायौ हियेपनते न टरै। उच्च उरोजनकों सुखलाभरहै इमयाते गरेहूपरै ॥ ५९६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अतिअगाधअतिऔथरो नदीकूपसरबाय ॥
सोताकोसागरजहां जाकीप्यासबुझाय॥ ५९७ ॥

यह अन्योक्त अपनो कार्य्य छोटेहूते होय तहां कहिये ॥ सवैया ॥ कूप तड़ाग सरोवर बापी किती महिमें नहिंजात बखानी। छोटी नदीरु बड़ी सरिता नद जो रचना जगदीशने ठानी ॥ उत्तम मध्यम कोऊ जलाशय होहु अगाधिक औथरोपानी। ताको वही कविकृष्ण समुद्रहै जाकी तृषा जिहिं ठौर सिरानी ॥ ५९७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिषमबृषादिककीतृषा रहैसबैजलशोधि ॥
मरुधरपायमतीरहू मारूकहतपयोधि ॥ ५९८ ॥

यह अन्योक्त अपनो प्रयोजन काहू छोटेते सिद्धभये अरु बड़े के बहुत संपृद्धिहै अरु अपने काम आवै नहीं तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ बृषको तन नितचै विषम करनि सब सलिल सुकातकहूं औडेई रहत है। जीव जंतु थलथल प्रबल अबल सब अकल पकल हैात कल न लहत है ॥ आतप के ताये अतिप्यास के सताये जल शोधत फिरत प्राण राखिबो कहत है। ऐसे समै पायो काहू भागते मतीरा तासों मारू लोग जलनिधि न्यायही कहत है ॥ ५९८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० प्यासदुपहरीजेठके जीयमतीरनुशोधि ॥
अमितअपारअगाध जलमारौमूड़पयोधि ५९९ ॥

यह अन्योक्त अपनो कार्य्य सिद्धभये जैसे तैसे सिद्धभये पाछे सर्व संपत्ति मिलै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ कौन काम जगतमें तासुकी बड़ाई भाई जाते कछू गरज सरै न काहूपनमें। छोटेही ते आपनो सफलहोय काजु तोपै वाकी पटतर और कौन त्रिभुवन में ॥ जाके प्राण दारुण निदाघनकी तृषा माहिं बास तीरे पाय सियराई भई तनमें। ताके आगे कहौ कोऊ सागरकी बात औंड़ी सलिल अधार कैसे आवैं ताके मनमें ॥ ५९९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कोकहिसकैबड़ेनसों लखेबड़ीयेभूल ॥
दीनेदईगुलाबकी बिनडारनयेफूल ॥ ६०० ॥

यह अन्योक्त कोऊ प्रवीन महाजन अनजाने अविवेकको कामकरै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ को यह बात सकै कहि भूलिकै कामकरै करतारन जैसे। येती करी जगकी रचना पै बिचार बिना न करै नहिं तैसे ॥ देखिहूंकी नवशासन सास बड़े जु करैं कछु काम अनैसे। वैसी सकण्टक डार गुलाबकी फूल सुगन्ध दये मृदु ऐसे ॥ ६०० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० दिनदशआदरपायकै करिलेआपबखान ॥
जौलगकागसराधपख तौलगतौसनमान ६०१ ॥

यह अन्योक्त कोऊ थोड़े दिननको बड़वार गर्बकर तहां कहिये ॥ सवैया ॥ धूसर कण्ठ कठोरमहा सखरे कही लोचनु रंग है कारो। नीच कहावत प-

चितनमें अरु भक्तनी साजु कुचाल निहारो ॥ आदर पाय दिना दश को अभिमान निसांक घनो चितधारो । बायस जौलौं सराधको पावहै तौलगिहै जग आघ तिहारो ॥ ६०१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मरतप्यास पिंजरापरयो सुत्रासमयकेफेर ॥
आयसुदैदैबोलियत बायसबलकीबेर ॥ ६०२ ॥

यह अन्योक्त भलेमानस को दुःखदीजै अरु नीचकी आदर होय तहां कहिये॥ सवैया ॥ दोषसमै के प्रभावको भाव भयो जग औगुनहींको रिझोवा । बूझगई गुण वृन्दन की प्रकटे अब कूर कुरूप अगोवा ॥ प्यासो मरै पिंजरा में परयो सुकहै मृदु बैननिकोज कहोवा । आदरकै बलिदेवेकी बेर बुलैयत चाइके चायसों कोवा ॥ ६०२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० यहैआशअटक्योरहै अलिगुलाबकेमूल ॥
ऐहैंफेरबसंतऋतु इनडारनवेफूल ॥ ६०३ ॥

यह अन्योक्त जानै कहां कछू पायो है तहां वैसाई आशालयोरहै तहां कहिये काकुध्वनितैं यह होय कितवाही भरोसे क्योंरहै ॥ सवैया ॥ वे इन टारन फूलहुते जिनके रसते सबदुःख भुलानो । बीति बहारगई तिनकी कुसुमावलि चित्तचुभै नहिं आनो ॥ ऐहै बसन्त बहार तबै यहवांसुख सौरभहीको ठिकानो । आश यहै जियमें धरि भौंर गुलाबके मूल रहै मड़रानो॥६०३॥नरअक्षर३३गुरु१५लघु१८॥

दो० पटपाखैभखुकाकरैं सपरसराईसंग ॥
सुखीपरेवापुहुमिमें येद्वैतुही बिहंग ॥ ६०४ ॥

यह अन्योक्त जो कोऊ पराधीन अरु परदेशी नाहीं तहां कहिये ॥ सवैया ॥ भोजन कांकर बीनकरै न करै जो अधीन है काहूकी सेवा । पाखनहींके बने पटु चारु बिसारको जानत भाव न भेवा ॥ नीकेरहै गृहिणी के सदासँग पूरब पुण्यन को फललेवा। कौनहू भांति न आश पराई सुखी अपनीपै तुहीहै परेवा ॥६०४॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० करिलैहिसूंघिसराहिहूं सबैरहैगहिमौन ॥
गंधीगंधगुलाबको गँवईगाहककौन ॥ ६०५ ॥

यह अन्योक्तको गुणकी बूझ न करै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ सख्योहै बयार

ते अमौलिक अतर आगे जाके मृदुगन्धसों महकि रह्यो भौनहै । ओड़ ओड़ हाथ सबहीने लियो देखिबे को सूंघि सूंघि सबनि सराहिगहचो मौनहै ।। मोल सुनै सबहीते हँसि हँसि मचाई कूक पंथगहि अब तू करत क्यों न गौनहै । अरे गन्धी आंधरे ! हिये में येतो चेतकर गाहक गुलाब को गबेले गांव कौनहै ।। ६०५ ।। नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ।।

दो० वेनयहांनागरबढ़े जिनआदरतो आब ॥
फूल्योअनफूल्योभयो गँवईगांवगुलाब ॥ ६०६ ॥

यह अन्योक्त अप्रवीण लोगनको समुदाय होय गुणकी बूझ कोऊ न करै तहां कहिये ।। सवैया ।। चायसों आदर तेरो करो अरु तोहीसों राखे हियो अनुकूल्यो । तो मृदु सौरभको सुरलै जिनके मन मोद रहै अतिभूल्यों ।। कीमत तेरी बढ़ावै धनी रिझवान वही जिनको तुकभूल्यो । ऐसे गँवारनु के बसिवास में फूल गुलाबभयो अनफूल्यो ।। ६०६ ।। चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ।।

दो० गोधनतूहरष्योहिये निधरकलेहुपुजाय ॥
समझपरैगीशीशपर परतपशुनकेपाय ॥ ६०७ ॥

यह अन्योक्त कोऊ काहूको द्रव्यखात होय अरु पीछे देवी आवे तहीं कहिये ।। सवैया ।। सुनिकोलमुखी कलगावतगीत जे कोकिल कण्ठ सुभायन सों ।। बहु भांतिन के पकवान बनाय मनावै सबै सतभायनसों । अब गोधन तू मृदु मानिहिये बहुभांति पुजाय लै चायन सों । परिहै सुधि तोहिं सबै तबहीं पशु खूबहि गे तन पायनसों ।। ६०७ ।। मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ।।

दो० नागरिबिबिधबिलासतजि बसीगँवेलिनमाह ॥
मूढ़नमेंगनबीकितू हूठ्योदैइठलाह ॥ ६०८ ॥

यह अन्योक्त जहां सब एकसे होहिं तिनमें एक और भांतिचलै तहां कहिये ।। कबित्त ।। रूपगुन आगरी वेनागरी होहिं इहां आदरु लहत बहुभाजि जितु तीनु में । चारु चतुराई के बिलास वे दुराबेरहि परगट काहेको करत इन तीनुमें ।। अबतो भयो है बास ह्यां गँवारनुमें याहीते सिखावतहो करिबिनतीनमें । हूठ्यो दैकै इनकीसी भांति इठलाहना तौ मूढ़नि में अब गनियेगो बिनतीन में ।। ६०८ ।। मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ।।

दो० चल्योजाहुह्यांकोकरै हाथनकोब्यापार ॥

नहिंजानतइहपुरबसत धोबीऔरकुम्हार ॥६०९॥

यह अन्योक्ति कोऊ नीचनके बासमें कोऊ भलाई की बातकहै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ जानि बूझि काहेको तू चरचा करत इत बन कदलीनकी न बिकट थरीनकी । रचिपचि बन्दन सौं काहेको बनाये कुंभ काहेको ये भूलभूलकाये हैं जरीनकी ॥ चरयो क्रिनजाय वृथाबासर गवाँवै जिन गाहकी करै को मद मोकल करीनकी । बसत कुम्हार और धोबी इह गावँ येतो करत खरीद खासा खर बोखरीनकी ॥ ६०९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करिफुलेलकोआचमन मीठोकहतसराहि ॥
चुपकरिरेगंधीचतुर अतरदिखावतकाहि ॥६१०॥

यह अन्योक्ति मूर्खजानि तासों चतुराई जतावे तासों कहिये ॥ कबित्त ॥ नगरके नगरते तेरी ऊंची टेरसुनि चोपसों बुलायलीनों कही आगे आवरे । बैठारयो निकट अति प्रीतिसों हुकुम कीनों सौंधे बेस कीमतीको हमहिं दिखावरे ॥ आचमन करिकै फुलेलको कहत मीठो तैं न अजौं जान्यो सुघराई को प्रभावरे । काहेको उघारत गुलाब को अतर गंधी कहां गई तेरी चतुराई अब बावरे ॥ ६१० ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

राजाजयसिंह को बचन बर्णन ॥

दो० प्रतिबिंबितजयशाहद्युति दीपतिदरपणधाम ॥
सबजगजीतनकोकियो कायव्यूहमनुकाम ॥६११॥

यह राजाकी सुन्दरता बर्णन कविकी उक्ति सखीको बचन नायकसों नायिकाको बचन सखीहूसों होय ॥ सवैया ॥ राजत दरपण मन्दिरमें महिमंडनु श्रीजयसिंह सवाई । त्यों प्रतिबिंबनिकी अवली चहुंओर लसें अतिही छबि छाई ॥ कैधौं अनेक स्वरूपधरे रबिराजत मंडली मंडसुहाई । मानहुं जीतबे को जगमें रचना बपुव्यूहकी काम बनाई ॥ ६११ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चलतपायनिगुनीगुनी धनमनमुतियनमाल ॥
भेंटभयेजयशाहसों भागचाहियतुभाल ॥६१२॥

यह राजाको दान कवि उक्ति ॥ कबित्त ॥ दीजत मँगाय कै तुरंग रंग रंगनके तुरत भंडार शिरपांयन सों भरिये । किम्मत बिशाल शालमुरचनमाल लाल हीरा मुकुताहल बकसंदार ढरिये ॥ गुनी अनगुनी सब कीजत निहाल हाल याचक

की बिपति अनेकभांति हरिये। भेंटभये नृपति सवाई जयशाहजूसों होत बड़भाग फलभाग कहा करिये ॥ ६१२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहतनरणजयशाहमुख लखिलाखनुकीफौज ॥
यांचि निराखरहूचलै लैलाखनकी मौज॥६१३॥

यह राजाकी शूरता दान कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ कूरम सवाई जयसिंहकै अभंग जगमगत दिनेशकोसो तेज अंगअंगमें। लाग्योइ रहत नित सरमति जयको चाव दान करिबेको चितरहत उमंगमें ॥ परदल लाखनको नृपको बदन लखि सनमुख रहि न सकत रणरंगमें। आखर न जाने सोऊ लाखन लहत सब यांचै सों अयाचीहोत मौनके प्रसंगमें ॥ ६१३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सामासैनसयानसुख सबैशाहकेसाथ ॥
बाहुबली जयशाहजू फतेतिहारेहाथ ॥ ६१४ ॥

यह राजाकी जयसिद्धि बर्णन कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ जगमग्यो दल छत्रपतिको प्रताप नवखण्डमें अखण्ड दाबे अरिनु के माथहै। तेरेई उदण्ड भुजदण्डके भरोसे सोऊ रहत निशंक अवदात यहगाथहै ॥ सुभट समाज सामा सयन सयान सुख संचै सबभांतिनुकी शाहजूके साथहै। रहत सवाई जयसिंह महाराज सदा समर बिजयकी सिद्धि रावरेई हाथहै ॥ ६१४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अनीबड़ीउमड़ीलखे असिवाहकभटभूप ॥
मंगलकरिमान्योहिये भौमहिमंगलरूप ॥६१५॥

यह राजाकी शूरता अरु बीररस कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ सांभर के खेत आये उमड़ि अमित दल सैंपद सुभट महाविक्रमनिधानहै। गरजे गरूर गहैं निपट कपट आप बिकट कुवड़े सांत्रि बरषत बानहै॥ साहसी सवाई जयशाहभूप ऐसे समय बीररस राच्यो थिरभयो तिहिंथान है। उमँगि उछाह महामंगल के मान्यो हिये बदनको रंगभयो मंगल समानहै ॥६१५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु२२॥

दो० योंदलकाढ़ेबलकतें तैंजयसिंहभुवाल ॥
उदरअघासुरकेपरे ज्योंहरिगायगुवाल ॥ ६१६ ॥

यह राजाकी शूरता पराक्रम ॥ कवित्त ॥ एक रसना सों मोपै कैसे कहै परै जैसे जेते बिक्रम अमित कीने नृपति सवाई तैं। केशव अघासुरते राख्यो ब्रज जैसे ऐसे हसन अलीकी दिली मिली बगिलाई तैं ॥ जे जिया निवारयो दावानल सों प्रबल दुख बलकै बिपति हिन्दुवान की बढ़ाई तैं। कीली ज्यों कुचाली काटि दूरकीनों मुहकमा कीरति प्रकाश जग आप्यो उजराई तैं ॥ ६१६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घरघरतुरकिनिहिंदुनी देतअशीशसराहि ॥
पतिनुराखिचादरचुरी कैराखीजयशाहि ॥ ६१७ ॥

यह राजाको पराक्रम सबपै उपकार कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ आयो इत उमड़ि अजीतसिंह ऐडायल संगलै बिकट सुभटनके समाजको। कहै कवि कृष्ण इत दिल्ली के प्रबलदल निकसे सकल साजें समरके साजको ॥ ऐसे समय बीर बिसुनेशके अजिनबाहु राखीते दुहुनकी लाज करिकै इलाज को। घरघर तुरकिन हिन्दुनी दुनीमें सब देत हैं अशीश जय शाह महाराजको ॥ ६१७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

हास्यरसबर्णन ॥

दो० रबिबन्दौंकरजोरिकै सुनेश्यामकेबैन ॥
भयेहँसौहैंसबनके अतिअनखौहैंनैन ॥ ६१८ ॥

यह हास्यरस चीरहरणको समय सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ गोपबधूनके चीरचुराय कदंबपै धाय चढ़्यो हरि ज्योंहीं। हाथसों गात छिपाय कै वै सकुचीं सतरायकै मांगत त्योंहीं ॥ देव दिवाकरको करजोरि प्रणाम करौ कही बात रसौंहीं। यों सुनिकै तिहँसौंहींभई सबकी अँखियां जु हुती अनखौहीं ॥ ६१८ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० परतियदोषपरानसुनि मुलकिहँसीसुखदानि ॥
कसुकरिराखीमिश्रहू मुँहआईमुसकानि ॥ ६१९ ॥

यह हास्यरस पौराणिकको परिहास कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पंडितराज समाजमें बैठि कथा यों प्रसंग पुराणमें भाखी। जात निरैंद चौरासीबसे परदारसों जो हितको अभिलाखी ॥ सो सुनिकै मुलकी मृगलोचनि जासोंही दीठमिलायकै राखी। भट्टमुंबाहि बिलोकतही उमँगी मुसुकानि मरूकरिराखी ॥ ६१९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चितपितमारकयोगगुनि भयो भयेसुतशोग ॥
फिरिहुलस्योजियज्योतिषीसमभयोजारजयोग ६२० ॥

यह हास्यरस ज्योतिषीके परिहास्य कवि उक्ति ॥ सवैया ॥ पूतभयो इक ज्योतिषिके ग्रह शोधत सो चितमें हुलसानों । डीठपरयो पितुघातक योग विचार हिये अतिही अकुलानों ॥ जारजयोग लख्यो तबहीं मुलक्यो परमानि हुलास सयानो । भूलिगयो दुख फूलउठ्यो मुख आनँदपुंज हिये अधिकानों ॥ ६२० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बहुधनलैअहिसानकै पारोदेतसराहि ॥
बैदबधूहँसभेदसों रहीनाहमुखचाहि ॥ ६२१ ॥

हास्यरस बैद्यके परिहास कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ विज्ञ चिकित्सा के भेदन में इक बैद हुतो पुरुषारथै हीनों । काहु नपुंसक को बहकाय घनो धन लै बहुतें थरुदीनों ॥ पारो प्रचंड बढ़ावत है चितकेलि कलोलकी चावनवीनों ॥ एक तिया सुनि वाकी तिया पतिके मुखओर चितै हँसिदीनों ॥ ६२१ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० देवरफूलहनेजुसुसु उठे हरषअँगफूलि ॥
हँसीकरतओषधिअलिनुदेहददोरनभूलि ॥ ६२२ ॥

यह नायिका सुरता देवरसों आसक्त है सखीको वचन सखीसों हर्ष अरु हास्यसंचारी ॥ सवैया ॥ खेलमें देवरके करके ते जहीं जहीं फूललगे नवलातन । आनँदपुंज उमंग तहीं तहीं फूल उठे अतिकोमलगातन ॥ देह ददोरन भूलि अली उपचारकरै लहै भेदकी बातन । जानतहों जियकी बतियां रसविज्ञ तिया हँसि हेरत बातन ॥ ६२२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औरसबैहरषीहँसति गावतभरीउछाह ॥
तूहीबहुबिलखीफिरै क्योंदेवरकेब्याह ॥ ६२३ ॥

यह नायिका परकीया गुरुजनको बचन देवरसों प्रीति यह व्यंग ॥ सवैया ॥ ये सब साजे अनेक शृँगार बनीठनी डोलैं हुलास उमाहें । गावैं हँसैं हरषैं बरषैं सुख काहू की शंक भरे चितनाहें ॥ भौनमें मंगल साजे भरे बहु सोई लहैं सब जो चितचाहें । देवर के इह ब्याह बहू बिलखीसी तुही लखिये कहि काहें ॥ ६२३ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० समयपलटिपलटैप्रकृति कोनतजेनिजुचाल ॥
भोअकूरकरुणाकरो यहकुपूतकलिकाल॥६२४॥

यह परसतात्र में सम्भव है कलियुग को बर्णन ॥ सवैया ॥ कारों पुकार करों बिनती इकसार भयो सगरो जगजोऊ । जाति समय पलटै प्रकृत्यों फिर क्यों न स्वभाव तजो सब कोऊ ॥ आरतसिंधु दयाको समुद्र अनाथको नाथ कहावत होऊ । है गयो देखो महानिरदै कलिकाल कुपूतहि आवत सोऊ ॥ ६२४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दीरघसासनलेहिदुख सुखसाईंनहिंभूल ॥
दईदई क्यों करतहै दईदईसकबूल ॥ ६२५ ॥

यह करुणारस भक्तको बचन अपनेमनसों ॥ कबित्त ॥ जो तू दुःमलहै तोतू जिन अकुलाय लैलै दीरघ उसास चित चिन्तामें न झूलरे । सुख जो लहै तो सब भांति सावधान रहि सम्पति मगनह्वैकै हरषि न फूलरे ॥ थिर न रहत येती सुख दुख होतमात कृष्ण करुणामयीकी सूरति न भूलरे । काहेको करत अति आतुरह्वै दईदई जो दईदई सो भलीभांति सों कबूलरे॥६२५॥नरअक्षर३३गुरु१५लघु१८॥

दो० दयौसुशीशचढ़ायलै आछीभांतिअबेर ॥
जापै सुख चाहतलयो ताकेदुखहि न फेर ॥ ६२६ ॥

यह भक्तको बचन अपने मनसों ॥ सवैया ॥ रातू वाको बिश्वास हिये श्रुति जाहि सदा परिपूरणरै । रंकते रावकरै पल एक में जो वह नेक कृपाकरहैरै ॥ जो कछु तोहिं दयो जगदीश सुशीश चढायके क्यों न अयेरै । जो पै लये सुख चाहत है अब ताके दये दुखको जिन फेरै ॥ ६२६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कीजेचितसोईतिरै जिइपतितिनकेसाथ ॥
मेरेगुणऔगुणसबै गिनोनगोपीनाथ ॥ ६२७ ॥

भक्तको बचन भगवान् सों ॥ कबित्त ॥ तोसों एक तुही और दूसरो न रामा राम तेरेही रचेहैं लोक सुर नर नागरे । सोई बीतराग जिन कीने तप जप याग सोई बड़भाग जाको तोसों अनुरागरे ॥ आपतनु देखिये न देखो करतूत मेरी अधम उधारबेकी तेरे शिरपागरे । मोसे अपराधी हैं न तोसे हैं मददगार मोसे निरगुणी हैं न तोसे गुणआगरे ॥ ६२७ ॥ मर्कट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० भजनकह्योतातेभज्यो भज्यो न एकोबार ॥
दूरभजनतातेकह्यो सोतौभज्योगँवार ॥ ६२८ ॥

यह भक्तको वचन अपने मनसों ॥ सवैया ॥ मेरीतौ सीख सुनी असुनी करिते मनऔरै मतौउनियेरे । मैं कही याहि भलीबिधिसों भजितूतिहतैं भजदूर भयेरे ॥ जाते कही अतिदूरि भज्यो रहि सोतो भज्यो हितसाजनयेरे । कृष्णकहैं यहस्यान- पतैं सब एकही बेर कहा बितयेरे ॥ ६२८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु१४ लघु२०॥

सो० मैंसमझ्योंनिरधार यहजगकाचोकाचसों ॥
एकैरूपअपार प्रतिबिंबितलखियेजहां ॥ ६२९ ॥

कवित्त ॥ निपट असार दुख द्वंद्वको अगार अरु भांति भांति भरयो भयभ्रमनि के भारहै । सांचोकोसो ढारयो ताते सांचोसो निहारियतु जौलौं लखियत मोसों नहिं थिरनारहै ॥ मैंतो मनमांझ में तौ समझयो बिचारकरि यह जगकाच ऐसो काचो निरधारहै । जित तित पूर रह्यो पूरण पुरुष वह एकै रूप तहां प्रतिबिम्बित अपारहै ॥ ६२९ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मैंतपायत्रैतापसों राख्योहियोहमाम ॥
मतकबहूंआवैयहां पलकपसीजैश्याम ॥ ६३० ॥

यह भक्तको बचन ॥ कवित्त ॥ गावैं गुण शेष जाको ध्यावत महेश मुनि सा- धत समाधि बहुभांति चितलायकै । ऐसो कोऊ बिधि मोपै आवत न बनि जाते वशकरें त्रिभुवनपति को रिझायकै ॥ एकबात उरधरि अपने हियेमें करि राख्यो खेहमाम तिहु तापसों तचायकै । वह करुणामयी कहावतहै दीनबन्धु मति कहूं पु- लकि पसीजै इतआयकै ॥ ६३० ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ब्रजबासिनकोउचितधन जोधनरुचितनकोइ ॥
सुचितनआयोसुचितई कहौ कहांतेहोइ ॥ ६३१ ॥

यह भक्तको बचन प्रयोजन यहै है कि बिना श्रीकृष्णध्यान सुचिताई नाहीं ॥ कवित्त ॥ जाकी तनशोभ नवनीरदसी देखियत पीतपट दामिनि दमकि छबिछाई है । लोचन ललित लसैं रसभरे तामरस कुंचित अलक अलि अवलि सुहाई है ॥ ऐसो ब्रजबासिन को उचितहै धन तामें दीनेते न गनुमति विष परचाई है । कौन भांतिहोत सुचिताई जियतोलौं जोलौं रूपकी निकाई वह जीयमें न आई है ॥ ६३१ ॥ करभअक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० लोपेंकोपेंइन्दुलों रोपेंप्रलयअकाल ॥
गिरिधारी राखेसबै गोगोपीगोपाल॥ ६३२ ॥

यह बीररस श्रीकृष्णने गोवर्द्धन धरिकै व्रजवासी सब राखे ॥ कबित्त ॥ लोप्यो बलि भाग सुनि कोप्यो अति सुरपति प्रभु ताके उमँगि गुमान मनु आये हैं । आहिकारि कही बारिवह सब एकतहै व्रजको बहावो ऐसो चलन चलाये हैं ॥ मड़िगोराधार बरसत बिकरालघन मानों महाप्रलय के साथ चलि आयेहैं । ऐसे समय नन्दके सुवन कर गिरि धारि गोपी ग्वाल गाय बच्छ सबही बचाये हैं ॥ ६३२ ॥ चलअक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२ ॥

दो०प्रलयकरन बरसनलगे जुरिजलधरइकसाथ ॥
सुरपतिगरबहर्योहरषिगिरिधरिगिरिधरहाथ६३३

यह बीररस गोवर्द्धनको समय ॥ कबित्त ॥ प्रलयके घुमड़ि घनआये व्रजमंडलपै मंडिकै अखण्डधार लायो झरअतिको । निरखि बिकलभये गोपी गाय ग्वाल सब काहूके हिये में रह्यो धीरज न रतिको ॥ ताही समय यशुदाको लाल ऐसो हालदेखि हरषि हरैयाभये व्रजकी बिपतिको । पातलों उठाय राख्यो गिरिवर पाणिपर दूरकीनों सरब गरब सुरपतिको ॥ ६३३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० कहतिनदेवरकीकुमति कुलतियकलहडराय ॥
पंजरगतिमंजारढिग शुकलौंसूकतजाय॥ ६३४ ॥

यह भँवर सुदेवरकी धृष्टता सखीको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ देवरचपलचित उरमें कुभावधरि कहत अनैसीबात यासों दिनरात है । कहै कबिकृष्ण यह परम सुशीलबाल सकुचि सकुचि मनमेंही अकुलात है ॥ कहि न सकत काहू आनसों हियेको भेद कुलतिय कुटुँबके कलह डरातहै । निकट बिलावके पखेरू पिंजराको जैसे तैसे यह बाल निशिदिन सूकीजातहै॥६३४॥त्रिकलअक्षर३९गुरु९लघु३०॥

दो० मोहनमूरतिश्यामकी अति अद्भुतगतिजोय ॥
बसतसुचतअंतरतऊ प्रतिबिंबितजगहोय ६३५॥

यह अद्भुतरस भगवान्की व्यापकता वर्णन भक्तको बचन ॥ सवैया ॥ ऐसी न और तिहूँपुरमें छबि जैसी वा नन्दकिशोरमें पेखी । ताहि बिलोकि मनोज की

मूरति को बरणै अतिरूप विशेखी ॥ और कहा कहौं सुन्दर श्यामकी अद्भुत रीति खरी अवरेखी। अन्तरराखि बसाय हिये केऊ जग में प्रतिबिम्बित देखी ॥ ६३५ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तियकतकमनैतीपढ़ी बिनजिहभौंहकमान ॥
चलचितबेझेचूकतिनहिं बंकबिलोकनिबान ६३६ ॥

यह अद्भुतरस सखी और नायकको वचन नायिकासों सखीहूसों संभव है ॥ कवित्त ॥ ऐसी तू कहांते अति अद्भुतगति यह तेरी कमनैती बरणत न बनति है। कहैं कविकृष्ण येतौ प्रकट विलोकियत भृकुटी कमान जिह बिनाई तनतिहै ॥ तिनतेकढै अडीठि कुटिल कटाक्षशर चूकत न चलचितबेझेको हनति है। तेरी या बिलोकनिकी निरखी अनोखी रीति मेरी मति अतिहित कौतुक सनति है ॥ ६३६ ॥ कच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० दृगउरझतटूटतकुटुँब जुरतचतुरचितप्रीति ॥
परतगांठदुरजनहिये दईनईयहरीति ॥ ६३७ ॥

यह अद्भुतरस द्रष्टानुराग नायक अथवा नायिकाको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ लागी रहै मनमें दिखसाध दई यह रीति नई दुहुँघातो। लोचनप्रीतमकी छविसों उरझे सबटूटै कुटुंबको नातो ॥ कृष्णकहैं अति चोपके चाय जुरे हियेको हितु होत न हातो। बैरिनके उरमें परै गांठि अनोखो निहारयो सनेह को नातो ॥ ६३७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तोलखिमोमनजोलही सोगतिकहीनजाति ॥
ठोड़ीगाड़गड़्योतऊ उड़्योरहेदिनराति ॥ ६३८ ॥

यह अद्भुतरस है द्रष्टानुराग नायकको वचन नायिकासों ॥ कवित्त ॥ तेरे तनराजै बृषभानुकी कुँवरि जैसे ऐसे छविपुंज तिहूंपुरमें नहत है। तामें और अद्भुतरीति अवरेखी ताही सुमिरि सुमिरि अचरज उमहत है ॥ एक रसनासों मोपै कहत बनै न क्योंहूं तोहिंलखि मेरो मन जो गति लहत है। यद्यपि अगम ओड़ी ठोड़ी गाड़गड़्यो मन तऊ देखो आठौ याम उड़्योई रहत है ॥ ६३८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० याअनुरागीचित्तकी गतिसमझैनहिंकोय ॥
ज्योंज्योंबूड़ैश्यामरँगत्योंत्योंउज्ज्वलहोय ॥ ६३९ ॥

यह अद्भुतरस भक्तको बचन सखी सखीहूसों कहै तो सम्भवहै ॥ सवैया ॥ नैनन मांझरही खुभिकै वह नन्दकिशोरकी ऊठी सुहाई । प्राणनमें तऊ सालतहै कवि कृष्णकहैं सुधिश्रान भुलाई ॥ या अनुरागपगैं चितकी कछु अद्भुतरीति कहीं नहिंजाई । बूड़चोरहे रँग श्याममें ज्योंहीं ज्यों त्यों त्यों गहै अतिउज्ज्वलताई ॥ ६३६ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० जमकरिमुंहतरहरपस्यो यहधरिहरिचितलाय ॥
बिषयतृषापरिहरिअज्योंनरहरिकेगुणगाय ६४० ॥

यह शांतरस भक्तको बचन मनसों भयसंचारी ॥ कवित्त ॥ दशहू दिशान मांझ व्यापिरह्यो जाको धाकु कहौ वाके बिक्रमको कहांलौं प्रभावरे । तिनूकालों तोरे तीनों लोकके सकलबलि कोऊपै न बच्यो बहुकीयेहू उपावरे ॥ ऐसे काल करिकै पस्यो तू मुंहतरहरि कृष्ण कहैं यह धरि हरिचित लावरे । हारिमानि बिषय तृषान परिहरिमन नरहरि देवके समुझि गुणगावरे ॥ ६४० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोऊओरिकसंग्रहैं कोऊलाखहजार ॥
मोसम्पतियदुपतिसदाबिपतिबिदारनहार ॥६४१॥

यह शांतरस भक्तको बचन ॥ सवैया ॥ संग्रह कोऊ करोरि करोरि भरौ कोऊ लाखके लच्च भँडारो । कोऊ हजारक जोरिधरो बहुभांतिलहौ मनमें मृदुभारो ॥ कृष्ण कृपानिधि दीनके बंधु सुरद्रुमदानि मताप उज्यारो । संपति मेरेवहीयदुपचि बिपंचिसदा जु बिदारनवारो ॥ ६४१ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० जातजातचितहोतहै ज्योंचितमेंसंतोष ॥
होतहोतज्योंहोयतो होयघरीमेंमोष ॥ ६४२ ॥

यह परसताव कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सुरतके अन्तसमै जैसो याको मन सब ठौरते सिमिटिरहे ज्ञानही की टेकमें । ऐसो मनसदा जोपैरहै एकसरतोपै काहे को भ्रमत फिरै चौरासी अनेक में ॥ सम्पतिके जातुजात जैसो याको चित हारि आवतहै समुझि संतोष के बिवेक में । कहै कविकृष्ण ऐसी होत होइ तौपैहोय अनयाहीसहीं मुक्तिघरी एकएकमें॥ ६४२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३लघु२२॥

दो० यहबिरयोंनहिंऔरकी तूकरियावहिशोधि ॥
पाहननावचढ़ायजिह कीनैंपारपयोधि ॥६४३॥

यह शान्तरस भक्तको बचन मनसों ॥ कवित्त ॥ जहां काम क्रोध मद दारुण तिमिंगिलहैं सूझत न क्योंहूं पर परबेको दावरे। शोचभरयो सलिललहर तामें लोककी तृष्णा बिकराल भारी भौंरनको भावरे॥ कृष्णकहैं परयो तू विकट भवसागर में अब कछू और न उपाव चितलावरे। मेरो कह्यो मान याहि सुख ही तरेगो पतवारीकरि माला हरिनावैंकरि नावरे॥ ६४३॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० हरिकीजततुमसोंयहै बिनतीबारहजार॥
जिहतिहभांतिडरयोरह्यो परयोरहौंदरबार॥६४४॥

यह शांतरस भक्तको बचन भगवान् सों॥ सवैया॥ दीसत और न कोऊ दयानिधि तेरई एक भरोसो गहों। बेद पुराणनकी सुनि साखि हिये धरि आस हुलास लहौं॥ दीन उधारण बारहीबार यहै बिनती करजोर कहौं। जैसेहूं तैसेहूं डरयेहूं परयो दरबार मुरारि तिहारे रहौं॥ ६४४॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मनमोहनसोंमोहकरि तूघनश्यामनिहारि॥
नेहबिहारीसोंबिहरि गिरिधारीउरधारि॥६४५॥

यह भक्तको बचन मनसों अरु मानावती नायिकासों सखीको बचन कहिये तो संभवहै॥ कवित्त॥ मेरो कह्यो मानिमनमोहनसों मोहकरि सुंदर रतन घनश्याम को सम्हारिलै। ब्रजबनकुञ्जके बिहारसों बिहारकरि गिरिवरधारी सुखकारी उरधारिलै॥ भूलिकहूं चित्त बृथाबादमें रचावैमति कहै कविकृष्ण यह सुमति बिचारिलै। थिर न रहत धन यौवन भवन तन जानि ब्रजजीवन सों साचोपन पारिलै॥ ६४५॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२॥

दो० जपमालाछापातिलक सरैनएकौकाम॥
मनकाचैनाचैवृथा सांचेराचैराम॥६४६॥

यह खरापरसतावीक जौलों मनमें कचाई है तौलों ऊपरको स्वांग काम नाहीं आवत॥ सवैया॥ टीके मनोहर भाल बनायकै मालधरो उरमें किन सोलौं। छापन सों तन मंडित कै अरु ध्यान लगाय कहो किनकोलौं॥ नाचत नाच वृथा कबिकृष्ण कचाईरही उरमें भरितोलौं। काज कछू यह वेष सरै नहिं सांचिरची मति नाहिन जोलौं॥ ६४६॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० अपनेअपनेमतलगे बादमचावतशोर ॥
ज्योंत्योंसबकोसेयबो एकैनन्दकिशोर ॥ ६४७ ॥

यह भक्तको बचन अरु सर्वको अधीश्वर एक श्रीकृष्ण है यह सिद्धान्त ॥ सवैया ॥ जगमें अपने अपने मतलागि करै बकवाद बृथा भरमें। सबको वह सेयबे नंदको नंदनु ब्यापकहै जु चराचरमें ॥ बरसो नभते किन नीरकहूं सब आनि समातहै सागरमें। कबिकृष्ण कहै न करो चितखेद धरौ मुरलीधर को धरमें ॥ ६४७ ॥ बारन अच्चर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दूरभजतप्रभुपीठिदै गुणबिसतारनकाल ॥
प्रकटतनिर्गुणनिकटही चंगरंगभूपाल ॥ ६४८ ॥

यह भक्तको बचन जब याको गुण अभिमान है तब याते प्रभु दूरि हैं अरु निर्गुण तत्त्वहै तहीं प्रकट हैं यह रीति कलिकाल के राजान की कहिये तो संभव है ॥ सवैया ॥ कृष्णकहै कवि एकसी रीति प्रभू अरचंग निबाहत सोऊ। पीठिदै दूरही दूर भजैं गुणको बिस्तार करैं जब कोऊ ॥ नीकैही क्यों न लखो गुणमुक्त है शोचकैबाद परौ मति कोऊ। निर्गुणता प्रकटै जबहीं अतिही निकटै प्रकटैं तब दोऊ ॥ ६४८ ॥ नर अच्चर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तोअनेकऔगुणभरी चाहैयाहिबलाय ॥
जोपतिसंपतिहूबिना यदुपतिराखेंजाय ॥ ६४९ ॥

यह परसतावीक संपति बिना पति नाहीं रहति यह व्यंग ॥ सवैया ॥ औगुण पुंजभरी अतिचंचल याहि कहो जियको अभिलाखै। नंदकिशोर कृपा करिके वह संपतिहू बिन जो पतिराखै ॥ या बिनकाज कछू न सरै सब कोऊ यहै निहचै मतभाखै। जानियहै चितचाहि तियाहि उपायनुके बहुताकत पाखै ॥ ६४९ ॥ करभ अच्चर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० याभवपारावारके उलँघिपारकोजाय ॥
तियछबिछायाग्राहणी गहैबीचहीआय ॥ ६५० ॥

यह परसतावीक संसारसागरके पारहैवेको एकस्त्री अवरोध है ॥ कवित्त ॥ लोभमोह बासना भयावनो भवँर जहां असुर मनोज जाको बिक्रम महतु है। ऐसो भवसागर अपार बिकराल महा कहैं कबिकृष्ण को उलंघ निबहतु है ॥ साहस हिये मैं धरि यतन अनेक करि सब कोऊ याहि तारि पारभो चहतु है।

तरुणीकी छवि छाया ग्राहणी बिकट गहि राखत प्रबल तातें बीचही रहतु है ॥ ६५० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जगतजनायोजिहिंसकल सोहरिजान्योनाहिं ॥
ज्योंआंखिनसबदेखियेआंखिनदेखीजाहिं ॥६५१॥

यह शांतरस भक्तको बचन ॥ कवित्त ॥ ताहि तजि क्योंतू भूल्यो भटक बहेरे मन जाते लहियत सब सुखन को गोत है। मानि अनरुच हरिभजन पियूष छांड्यो जानिबूझि बिषम बिषहि डरभोत है ॥ जिन सब जगत जनायो भली भांति यह प्रभूपै न जान्यो ऐसो मोहको उदोत है। देखो जिन आंखिनही सब दरशायो तिन आंखिनको काहूभांति देखिबो न होत है ॥ ६५१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तौलगयामनसदनमें हरिआवेंकिहबाट ॥
बिकटजटेजौलगनिपटखुलेनकपटकपाट ॥६५२॥

शांतरस भक्तको बचन निर्वेद स्थायी भाव ॥ कवित्त ॥ सरल सुभाव गहि संतन के संगरहि संग्रह धरम लागि भगत के घाटरे। छोड़चोटपाइ गुणगाय करुणामयके यह समझायवेसों कहै तू निराटरे ॥ कहैं कविकृष्ण तूही देखि धौं विचार मन मन्दिर में हरितोलौं आवै किहबाटरे। जड़े हैं बिकट बृथा बादकी जँजीरन सों जौलौं ये खुलत नाहिं कपट कपाटरे ॥ ६५२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करौंकुबतजगकुटिलता तजौंनदीनदयाल ॥
दुखीहोहुगेसरलहिय बसतत्रिभंगीलाल ॥६५३॥

यह भक्तको बचन भगवान्सों ॥ सवैया ॥ चाहतहौं अपने हिय मांझ बसायो तुम्हैं प्रभु जैसेहूतैसे। कौन कुबातकरो सिगरो जग मोंचित एकहू आवै न वैसे॥ हौं कुटिलाई तजौं न कृपानिधि जानतहौं अपनो जिय ऐसे। दीनदयाल कहावतहो उरसूधो भये बसिहो तुमकैसे ॥ ६५३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कनदेबोसौंप्योससुर बहूथुरहथीजानि ॥
रूपरहचढ़ैंलगलग्यो मानतुसबजगआनि ॥६५४॥

यह परसतावींके सुमनै की नीति सरफाखर्चर अधिक भयो कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ सुंदर सुहाई सुकुमारि शशिवदनीकी शोभाकी निकाई कवि

कहैको बखानिकै। ननँदजिठानी सासनिरखि सिहात सभय अतिही सराहत हैं याके बैसवानिकै॥ ससुर ने सरफा बिचार सुख मानि हिय कनदेबो सौंप्यो बहू थुरहथी जानिकै। कहै कबिकृष्ण वाको रूप अवलोकिबेको लोभ लगि मांगन जगत लाग्यो आनिकै॥ ६५४॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो॰ सबैसुहायेईलगत बैससुहायेठाम॥
गोरेमुखबेंदीलसै अरुणपीतसितश्याम॥६५५॥

यह अन्योक्त आछो ठौरको प्रभाव जो आइ प्राप्त होय सो आछोही लगै॥ सवैया॥ नीकेके संग अनीकोऊ नीकोलगै यह बात प्रत्यक्ष निहारी। ठौरसुहाय लसैंते सुहाय लगैं सबही उमँगे छबिभारी॥ कैसे बढ़ावत मोदहिये नबनागर के मुख ब्याह में गारी। गोरे लिलार लसै बिंदुली सितराती हरी पियरी अरु कारी॥ ६५५॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो॰ पाइलपायलगीरहै लगीअमोलिकलाल॥
भोडरहूकीभासिहै बेंदीभामिनिभाल॥६५६॥

यह अन्योक्त नीचहै धनहै पै वह नीचीही ठौर रहैगो अरु भलोमानसहै अरु निर्द्धनहै तऊ ऊँचाई रहैगो॥ सवैया॥ जो जिहठौरके लायकहै तिहको बसुबासु तिही थल हैहै। देखो निहारि शृंगार के भेद में देखिये बात प्रत्यक्ष यहै है॥ यद्यपि लाल अमोल लग्यो तऊ पायल पायनही लगरै है। है वह भोडर की बिंदुली तऊ भामिनि भालही पै छबिपैहै॥ ६५६॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो॰ जो चाहै चटकनघटै मेलोहोयनमित्त॥
रजराजमुनिछुवाइतो नेहचीकनोचित्त॥६५७॥

यह परसताथीक्र मित्रतामें रजे गुण न लाजै तो सुघहै मित्रको बचन॥कवित्त॥ जगत में सबहीते महँगी है प्रीति एक खांच बिन कोऊ ताको लेशहू न दरसै। यही है यतन कबिकृष्ण याके पालिबे को मानों मति द्रोष जो तू आंखिनहू दरसै॥ जोपै नेहचीकने हियेको एकरस राख्यो चाहत चटक उजराई अतिसरसै॥ तोपै काहूभांति याहि मेलोमतिकरे मत ऐसे राखि जैसे रजराज मुनि परसै॥ ६५७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो॰ अजौतरौंनाहींरहत श्रुतिसेवतइकरंग॥
नाकबासबेसरलह्यो बसिमुक्तनकेसंग॥६५८॥

यह परसतावीक भक्तको वचन प्रयोजन यह कि इकरंग श्रुति सेवत रह्यो सुत-रचोनाहीं अरु बेसर जो काहूके सम नाहीं तिन नाक बास पायो काहू ध्वनि के कहेते चंदको दोष दूरहोय श्रुति कानहू कहिये तो संभव है ॥ कवित्त ॥ संगलाग्यो एकरंग श्रुतिहीको सेवत भरोसो धरिभारी जिय ऐसो नेम नह्योहै। कहैं कविकृष्ण तासों सब कोऊ करो हित हैं जु अजहूंलों तर्यो नाहिं तरचो रह्यो है ॥ प्रेमके प्रभाव की यहांलों अधिकाई जाके चितआई तिनहीं परम पदु गह्योहै । बिमल सुढार मुकतानि संग बसि लसि नाकको निवासु देखो बेसरिहू गह्योहै ॥ ६५८॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० अनियारेदीरघदृगन कितीनतरुणिसमान ॥
वहचितवनऔरैकछू जिहबशहोतसुजान ॥ ६५९॥

यह परसतावीक अन्योक्तहू बनै कविकी उक्ति सखीका बचन नायिकासों ॥ कवित्त ॥ कीजिये जु हेततो निबाहिये जु हितकीसी हितमें कहाहै बड़ो हेतहै हितैबे मैं। जानिये शृँगारतो शृँगारिये सबै सम्हारि जो शिरकिये हू बिनु भेदतो न कैबे मैं ॥ बोलिये जु बैन मनलैनका समति हूजै बोलि रिसकीजे तो न बोलिबो बुलैबे मैं । दीरघभोजये नैना तोरभये कहाभये प्रीतम के मोहिबेकी चातुरी चितैबे मैं ॥ ६५९ ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० जेशिरधरमहिमामही लहियतराजाराय ॥
प्रकटतजड़ताआपनियसुमुकुटपहिरतपाय ६६०॥

यह अन्योक्त जो आछयोमानस है भले आदर लायक ताहि निरादरसों राखे तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जो बहुभांति जवाहिर लै बहुभांति रच्यो अतिही छबिछाई। जाकी जगामग होत प्रभाअति जाहि लखैं सबकी ललचाई ॥ जाहि धरैं शिर भूपनके महिमण्डल में प्रभुता सरसाई। ता मुकुटै पगमें पहिरै प्रकटै तब वाहिकी मूरखताई ॥ ६६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चितदैदेखिचकोरत्यों तीजैभजैनभूख ॥
चिनगीचुगैअँगारकी चुगैकिचंदमयूख ॥ ६६१ ॥

यह अन्योक्त जाके एक आश्रय होय कै वाकी मिलेके वही को अंगीकार करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जाको जहां मन लागत ताहि सबै तजि वाहीको देखबो भावै । कृष्ण कहै बिनु देखे सहै सुबियोग व्यथा तऊ मोद बढ़ावै ॥ देंचित्त

देखि चकोरकी ओर न तीजै उपाय क्षुधा बहरावै। कै चुगै पावकके कनका कै निशाकर की किरन्यो जब पावै ॥ ६६१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तूमतमानैमुकतई दियेकपटबितकोटि ॥
ज्योंगुणहीत्योंराखिये आंखिनमाहिंअँगोटि ६६२॥

यह परसतावीक राजनीति में संभव है अरु नायिकाभेदमें सखी को बचन नायक सों कहिये तू याहि छांड़िदे मत आंखिन में राखि॥ कबित्त ॥ मुकतई न मानिये निर्दईजो कपट बितु कबिकरै तऊ छोछिबो न अभिलाखिये। कीजिये हमारो कह्यो दीजिये न जानकहूं बार बार बात समझाय यह भीखिये ॥ कहै कबिकृष्ण यही कहत सयाने सब देखो राजनीतिहू के ग्रंथन में साखिये। जानिये जो गुणही तो आनिये न और उर नीकेही अँगोट करि आंखिन में राखिये ॥ ६६२ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० दुचितैचितहलतनचलतहँसतनझुकतबिचारि ॥
लखतचित्रपीऊचितै रहीचित्रलोंनारि ॥ ६६३ ॥

यह नायकको चित्र देखि चकित है रही सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ ठाढ़ी ठगीसी हलै न चलै जिय शोचतहै बहुभांति बिचारति। मेरोइहै किधौं आन बधूको यहै निरधार हिये निरधारति ॥ यों चितमें दुचिताई गनै न हँसै न झुकै सुनिमेष न टारति। चित्र बिलोकति यों अवलोकि रही तिय चित्रलिखीसी निहारति ॥ ६६३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० देहलग्योढिगगेहपति तऊसनेहनिबाहि ॥
नीचीअँखियनहींइतैगईकनखियनुचाहि ॥६६४॥

यह नायिका परकीया की चेष्टा नायक सखी सों कहतु है ॥ सवैया ॥ मोपै कछू कहतें न बनै चित चातुरी जैसी बिहार गई है। मैं जबतें निरखी तबते उर मैन के शायक मारगई है ॥ पास जऊ पति देहलग्यो तऊ रीति सनेहकी पारगईहै। नीची ये आंखिन सों यहि ओर कनोखी चितौन निहारगई है ॥ ६६४ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कैसेछोटेनरनते सरतबड़नकोकाम ॥
मढ़योदमामोजातक्यों कहिंचूहाकेचाम ॥६६५॥

यह परसतावीक छोटेते बड़ेकी गरज न सरै कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जाको

जितो जगदीश रच्यो बल ताके फबै शिर तेतोई भारो। बात बिचार यहै अपने जिय कोऊ बृथा मत शोच बिचारो॥ छोटेते काम बड़े न सरैं वह केतोउ साहस कै पचिहारो। कोटि करो पै चूहा के चामसों क्योंहूं मढ्यो नहिं जात नगारो॥ ६६५॥ कच्छ अच्चर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० सम्पतकेशसुदेशनर नवतदुहुनइकबानि॥
बिभवसतरकुचनीचनर नरमबिभौकीहानि ६६६॥

परसतावीक कबिकी उक्ति॥ कबित्त॥ केश औ सुदेश नर रहैं सदा एक रस कहै कबिकृष्ण गहै एकसी ये बानि हैं। ज्यों ज्यों बढ़िवार लहैं त्योंहीं त्यों नवत दोऊ सकल प्रवीण यह बात उर आनि हैं॥ और देखो कठिन उरोज अरु नीच नर अकरे रहत करैं काहूकी न कानि हैं। सम्पत लहत त्यों त्यों रहत तनेने फेर आपुही नरमहोत भये बिभौ हानिहैं॥ ६६६॥ करभअच्चर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० शीतलतारसबासकी घटेनमहिमामूर॥
पीनसवारेज्योंतज्यो सोराजानिकपूर॥ ६६७॥

यह अन्योक्त कोऊ आछो गुणी है भलोमानस है कोऊ कूरने वाको सत्कार न कियो तहां कहिये॥ सवैया॥ जो सबभांति तच्योगरबी बिधि ताको बढ़ै जगते सोई तोरा। कृष्णकहै बिनजाने अजानेको पै वह आब्र लहै नहिंथोरा॥ पीनस रोगते काहू कपूतन छोड्यो कपूर जो जानिकै सोरा। शीतलताई सुगंधघटै यह कोऊ करै जियमें जिनभोरा॥ ६६७॥ चलअच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० बड़ेनहूतेगुणनबिन बिरदबड़ाईपाय॥
कनकधतूरेसोंकहै गहनोगढ्योनजाय॥ ६६८॥

यह परसतावीक कबिकी उक्ति॥ कबित्त॥ बड़ो जो बनायो जगदीश सो बड़ोई है ताहि सब जग चाहै आदर बढ़ायकै। कहै कबिकृष्ण वह तैसोई लहत मोल कंचनको देखो क्यों न कई बेर तायकै॥ छोटे जोपै बड़ेगुण बिन योंही बड़ो होत नामकी बड़ाई महिमण्डल में पायकै॥ तोपै वह कनक धतूरोऊ कहावत है क्यों न पहरत कोऊ गहनो गढ़ायकै॥६६८॥ मरकटअच्चर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० वहैसदापशुनरनको प्रेमपयोधिपगार॥
गिरितेऊंचेरसिकमन बूड़ेजहांहजार॥ ६६९॥

यह प्रस्ताविक प्रेम समुद्रकी अधिकाई कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जाको प्रमाण कह्यो न परै कछु आजलौं काहू न पार लहाहै । कृष्णकहै सुअगाधयहै लगि कैसेहूं कोऊ न पावत थाहै ॥ मेरुते ऊंचे रसज्ञन के मन बूड़े अनेक अचंभो महाहै । सो पशु पामर लोगनको वह प्रेम समुद्र पगार सदा है॥६६९ ॥ मदकल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० संगतिदोषलगैसबनु कहियतसांचेबैन ॥
कुटिलबंकभ्रुवसँगभये कुटिलबंकगतिनैन६७०॥

यह प्रस्ताविक संगति दोषलगै दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ औरते औरैई संगरहै जुगहै सुभली विधि बानि वही है। संगति दोषलगै सबको विधि है यह आदि अनादि सही है ॥ कृष्णकहै जग में यह बात प्रत्यक्ष प्रवीणन अच्छ चही है ॥ बंक भ्रुवानको पायके संगम नैननहू गति बंक गही है॥६७०॥ मर्कट अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० संगतिसुमतिनपावई परेकुमतिकेधंध ॥
राखोमेलकपूरमें हींगनहोयसुगंध ॥ ६७१ ॥

यह प्रस्ताविक जो दुर्बुद्धि की ढार में परयो ताको संगति ते सबुध नाहीं होत ताको दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ औरहीते जो कुपैंड़े चल्यो वह संगते क्योंहूं सुबुद्धि न पावै । संग इुरेके भलोऊ रहै तौ भलाई सबै ततकाल कहावै ॥ आपनीबात तजैईतजै वह संगतें क्योंहूं गहै न सुभावै । राख्यो बसाय कपूर केमध्यमें हींगहीक्योंहूं सुगन्ध न आवै ॥६७१॥शार्दूल अक्षर४२गुरु६लघु ३६ ॥

दो० बढ़तबढ़तसम्पतिसलिल मनसरोजबढ़िजाय ॥
घटतघटतपुनिनहिंघटै बरुसमूलकुंभिलाय६७२

कविकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ सदन सरोवरमें सुखकी हिलोरनसों संपति सलिल ज्योंहीं ज्योंहीं सरसात है । यह तो प्रगट सब जगत बखानत है मनहूं सरोज त्योंहीं त्योंहीं अधिकातहै ॥ जब जब आनिपरै आपदा अदिन कोऊ जलको प्रमाण फिर निघटत जातहै । घटत घटत फिर नाहिं घटै गति यह बरु वह सहित समूल कुंभिलातहै ॥६७२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० समैसमैसुंदरसबै रूपकुरूपनकोय ॥
मनकीरुचिजेतीजितै तिततेतीरुचिहोय६७३ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति नायिका भेद में सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सुंदररूपकहाँ किहि कामहै जो अपने चितमें नहिं आवै। जो चितमांझ कुरूप गुभ्यो तो वहै उरको अतिमोद बढावै। होतसभैई समै सब सुंदर रूप कुरूप न कोई लखावै। जाकी जिती जिहि ठौर बढ़ै रुचि सो तिहिठौर तिती रुचिपावै ॥ ६७३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० मूड़चढ़ायेहूंरहै पर्योपीठकचभार ॥
रहैगरेपररांखिबो तऊहियेपरहार ॥ ६७४ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ काहूके मूड़चढ़े रहिये न यहै गहिये चितमें चतुराई। नीकोमतो रहिये जुगरेहू पै तो लहिये उरकी गरुवाई ॥ मूढचढेहू परेरहैं पाछेको बंधनकी गति केशनपाई। देखो रह्यो जो गरेहूपरै औ बिहारकरै छतिया पै हराई ॥ ६७४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भावरअनभावरभरै करोकोटिबकबाद ॥
अपनीअपनीटेवको छुटैनसहजसुबाद ॥ ६७५ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ काहूबुरोलगो काहूभलो लगो खोटी खरी जियमें धरो सोऊ। लाखन क्यों न करो बकबाद अलौकिक लोक जो होय सोहोऊ ॥ ओरतें जाको परचो जु स्वभाव सुभाव वहै निबहै जग जोऊ। आपनी आपनी टेवको सिद्ध सवाद छुटै न कितौ करोकोऊ ॥ ६७५ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जेतीसम्पतिकृपणके तेतीतूमतिजोर ॥
बढ़तजातज्योंज्योंउरज त्योंत्योंहोतकठोर ६७६

यह प्रस्ताविक कृपणके जितनी सम्पति तितनीये कृपणता ताको दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ कौनहूं भाग प्रभायके दायसों सूमने जो कहुं सम्पति पाई। त्यों वह होत खरोई कठोर बिलोकिये तू मतिकी सरसाई ॥ ताहि निहारि कह्यो चहिये कछुबात यहै कविके जियआई। ज्यों ज्यों उरोज बढैं तियके उर त्यों त्यों गहैं अतिही कठिनाई ॥ ६७६ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० पियबिछुरनकोदुसहदुख हरषजातप्योसार ॥
दुर्योधनलोंदेखियत तजैप्राणउहिबार ॥ ६७७ ॥

यह प्रस्ताविक हर्ष दुःखहोय एकत्र कविकी उक्ति नायिकाभेद में सखी कौ

बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेहलग्यो मनभावन सों बसिबो ससुरारिको जीय सुहानो । नैहरतें कोऊ आयो चलावन ताहीसमै सुन जी अकुलानो ॥ प्यो बिछुरे दुखहोत महा सुख मायके को चित शोच समानो । मातरो पकज भो तियको मुख फूल्यो कछूक कछू कुंभिलानो ।।६७७।। धारण अक्षर ३८गुरु १० लघु २८।।

लोभकी अधिकाईबर्णन ॥

दो० घरघरडोलतदीनह्वै जनजनयाचतजाय ॥
दियोलोभचस्माचखनुलघुपुनिबड़ोलखाय ६७८॥

यह लोभकी अधिकाई प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ ठौरहिठौर घिघात फिरै लघुता जितही तित आप प्रकासै । यांचतहै सबही परजाय बढाय हिये बहुभांति दुरासै ॥ लोभको ऐसो धरचसमानर नैननम भटकै चहुंपासै । यद्यपिह अतिसूक्षमहू बह याहि तऊ अति दीरघ भासै ॥६७८॥ मर्कट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० कालबूतदूतीबिना जुरैनआनउपाय ॥
फिरताकैटारैं लसै याके प्रेमलगाय ॥ ६७९ ॥

यह प्रस्ताविक नित्यप्रेमके करिबेको उपाय कबिकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ मंदिर लदावको बनायो चाहै कोऊसोतो बिनाकालबूत क्योंहूं बनत न बानि है ॥ त्योंहीं प्रेममन्दिर कों कालबूत दूती ताहि बीचदियेबिनु कहौ कैसे ठिक ठानिहै ॥ कहै कबिकृष्ण परिपकहोहिं दोऊ तब सकल प्रबीण यह बात उर आनिहै । कालबूत दूती बिच राखिये न एकआंक टारिये न जौलौं तौला सुखही कि हानि है ॥ ६७९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बहकिनइहिबहिनापुली जबतबबीरबिनासु ॥
बचैनबड़ीसबीलहू चीलहघोंसवामांसु ॥६८० ॥

यह प्रस्ताविक सखीको बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ अब्ब रैहो नितही लड़ाईये करत कहा अरु सम्पत सोंजवारो जात जान्यो है । पातकर बीछू कोऊ आनत हैं पातपर रावरे सयाननु हमारे मनमान्यो है ॥ तेहीकरयो ऐसे जबै हरु बोउपाउ कछु बादिबहिनाप्यौ या परोसिनसोंठान्योहै । काहे होत मसौसैंन सबहीं कछु कहीही यहै सेहौ कोसों काटौ वेहीला व काज आन्यो है ॥६८०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो०. पियमनरुचिह्वैबोकठिन तनरुचिहोतशृँगार ॥

लाखकरौआंखिनबढ़ै बढ़ैबढ़ायेबार॥ ६८१ ॥

यह प्रस्ताविक नायिकाको बचन सखीसों, सौतिको शृंगार देखि याके गर्व भयो सो ईर्षासों कहतहै और सखी याके चित्तको भ्रम निवारणकरै सो संभवहै॥ कवित्त॥ बैठ्यो कुंजसदन बिलोकत है तुवमग तेरोनाम मोहन रटत बार बारही॥ उठि चलि हिलिमिलि मानि रंगरली मेरो कह्योमानि मानवती मौन है कहारही॥ पियमन बसिकरबोई है कठिन अरु तनद्युति सरसातसाजै हूं शृंगारही। कहै कवि कृष्णकीजै लाखनयतन तऊ लोचनबढ़ात न बढ़ाये बढ़ै बारही॥ ६८१ ॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२॥

दो० नीचहियेहुलस्योरहत गहेगेंदकोपोत॥
ज्योंज्योंमाथेमारियत त्योंत्योंऊंचोहोत॥६८२॥

यह कविकी अन्योक्ति॥ कवित्त॥ जनमतें कबहूं भलाई सों न भेंटभई जगतमें कोटिकधिक्कार धारियतहै। सहजसुभाय परकाजलै बिगारडारै औगुण गहै न गुणपुंजटारियतहै॥ नीचनरएते पै हियेमें हुलस्योई रहै गेंदके सुभाय गहै यों निहारियत है। जितही निचाईदेखि तितही हुरकिजाहि ऊंचहोत त्योंत्यों ज्यों ज्यों माथेमारियत है॥ ६८२॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० कोटियतनकोऊकरौ परैनप्रकृतिहिबीच॥
नलबलजलऊंचोचढ़ै अंतनीचकोनीच॥६८३॥

यह अन्योक्ति कविकी उक्ति जाको स्वभाव नीचहोय ताकी बढ़वारी हू होय पै स्वभाव न छूटै॥ सवैया॥ ओरतें जैसो स्वभाव पर्यो वह और प्रकार न कैसेहु है है। कोटिक क्यों न उपायकरौ कविकृष्ण कहैं निरधार यहै है॥ सोजगमें लखियेप्रत्यक्ष करौ जलयंत्रन सों निहचै है। केतेऊ ऊंचो चढ़ै नलकेबल नीरतऊ ढरि नीचोई ऐहै॥६८३॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० जाकेयेकतहीकहूं जगव्यवसाय न कोय॥
सोनिदाघफूलैफलै आकडहडहोहोय॥ ६८४ ॥

यह अन्योक्ति काहूके धनबढ़वार बहुत है और काहूकेकाम नाहींआवै तहां कहिये॥ सवैया॥ छांह न काहू के बैठबे योग न छीर अँचै कोऊ पेट भरै। फूलनते फलते दलते जगमें नहीं काहूको काजसरै॥ भौंर न भूलिभ्रमें उहि ओर पखेरू न कोऊ बिरामकरै। होतहरयो यह आक निकाम निदाघसमै बहु फूलैफरै॥६८४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० गुनीगुनीसबकोउकहै निगुनीगुनीनहोत ॥
सुन्योकहूंतरुअर्कतैं अर्कसमानउदोत ॥६८५॥

यह प्रस्ताविक है कछु गुण नाहीं अरु सब कोऊ वासों भलै कहै तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ बिन करतूत झूठी पदवी लहीं तौ बनहीकी न लगत उपहास पेखियत है । गुनीगुनी सबकोऊ कहतपुकारि काहू गुनी गुनीन मांझ लेखे लेखियतहै ॥ नगत बिदित जासोंमीठो कहियत सोई निपट बिषमबिष अत्ररेखियतहै ॥ जऊपेड़ आकको कहावत अरक तऊ अरक समानको उदोत देखियतहै ॥६८५॥ करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

मीतननीतगलीत है जोधरियेधनजोरि ॥
खायेखरचेजोजुरै तोजोरियेकरोरि ॥६८६॥

यह प्रस्ताविक जो सूम है कै धन जोरिधरै तो उचित नाहीं याते खायबो खरचिबो मुख्यहै ॥ सवैया ॥ जोपै गलीत भयेही जुरेधन तो वह जोरिबो काहू न भावै । नाम सुने सब भीत है भाजत क्यों जगमें अतिसूम कहावै ॥ मीत मतौ जियमें धरिकै यह जोरिकरोरिलौं जो बनिआवै । खाये दिये खरचे जुजुरे कछु सो अतिमोद हिये उमगावै ॥६८६॥ मदकल अच्छर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० यद्यपिसुन्दरसुघरऊ सगुनोदीपकदेह ॥
तउपरकासकरैतितो भरियेजितोसनेह ॥६८७॥

यह प्रस्ताविक नायिकाभेद में अरु सखीको भेद नायक सों सखी कहै कि तेरो सुन्दरतनहै गुन हँसतहै पै नेह चाहियतुहै ऐसे नायकहू से सखीको बचन संभवहै ॥ सवैया ॥ यद्यपि चारुगहै चिकनाइ सुढार ढरयो सुघरो पुनिहोऊ । कृष्णकहैं बहुपंडितकै गुनजोत जगाय धरै किन सोऊ ॥ है यह बात प्रसिद्ध सबै जग एकसी रीति निबाहत दोऊ । नेह भरयो बिनदीपक देह प्रकाश करै न कितोकरो कोऊ ॥६८७॥ मदकल अच्छर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अरेपरेखोक्योंकरै तुहीबिलोकिबिचारि ॥
किहिनरकिहिसरराखियेखरेबढ़ेपरपारि ॥६८८॥

यह प्रस्ताविक संसार व्यवहार , पै अतिबढ़े ते मर्याद छूटैही छूटै कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ केतेभये नर केते भये सर जास कछू गगुना नहिं भाखी । जौलौं बढ़ै उनमानगहै मरयादरहै तबहीं लग पाखी ॥ कौनको कौन परेखो करै

परमान कहा परतक्षको साखी । पै अतिकी बढवारभये अपनी परपारि कहो किनराखी ॥ ६८८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जोन्हनहींयहतमवहै कियेजुजगतनिकेतु ॥
होतउदयशशिकोभयो मानोशशिहरिसेतु६८९ ॥

यह चन्द्रवर्णन बियोगीको बचन कविहूकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पूरिरह्यो अध ऊरधमें धर अम्बरलों जिनदेव ठयोहै । जाहि बिलोकि बियोगीडरैं अनुरागन को मनमोद पियो है ॥ होय न जोन्ह वहै तमहै यह जानै सबै जगछाय लयोहै । होत उदोतलख्यो शशिको गहिसंक्रम को तन श्वेत भयोहै ॥६८६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चटकनछोंड़तघटतहू सज्जननेहगँभीर ॥
फीकोपरैनबरुफटै रँग्योचोलरँगचीर ॥६९०॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ सज्जन जे जगदीश रचे तिन की इकबानदशा निबटै । शील स्वभाव गहैं सहजे अनुराग समूह हियेउबटै ॥ नेहकरै सुखरोगहरो उनहूंकेघटै सुनक्योंहूघटै । चोलकेरंग निचोलरँग्यो सुन फीकोपरै फटतेहूफटै ॥६६० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कनककनकतेसौगुनी मादकताअधिकाय ॥
वहखायेबौराइहै यहपायेबौराय ॥ ६९१ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ कनक धतूरो सोनो दोऊ ये कहावत हैं सोने को धतूरे ते प्रभाव सरसतु है । कहै कवि कृष्ण वाही चाहतु न कोई याहि निरखि निरखि जोइ सोइ तरसतुहै ॥ सोनेमांझ सौगुनो धतूर तें सरस मद यह तो प्रत्यक्ष सब कोऊ दरसतुहै । वाहि जब खाय तब बौरई प्रकाश होत बावरो तुरत याहि जोई परसतु है ॥६९१॥ मदकल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० इकभीजेचहलेपरे बूड़ेबहेहजार ॥
कितेनऔगुनजगकरै बैनेचढ़तीबार ॥ ६९२ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति अन्योक्तिहू संभवहै ॥ सवैया ॥ एक परेते फँसे चहले यक भीजिरहे यक बूड़िगये हैं । एक बहैं तिनकी न लहीसुधि एक न धीरज छोड़िदये हैं ॥ बोरदई पहिली मरयाद बिलोकि किते भयभीतभयेहैं । बैसनदी चढ़ती बिरियां जग औगुनकीने कितेकनये हैं ॥६६२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० सुखसोंबीतीसबनिशा मनुसोयेइकसाथ॥
मूकामेलिगहेसुछिनु हाथनछोड़ेहाथ॥६९३॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति नायिकाभेदमें परकीयाको हाथस्पर्शको सुमान्यो ताहि सों रात्रि वैसेही बीती सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ रैनिव्यतीत भई सिगरी अति चायबढ़ै चितपै न अहूटै। दोउनके मन मोद बढ़ै अभिलाषनके दृढ़ बंधन छूटै॥ सोयेमनो मिलिकै इकसाथही योंबहुभांति हिये सुखलूटै। मूकामें मेलि गहै इकबार सुहाथते हाथ छिनौ नहिं छूटै॥६९३॥त्रिकलअक्षर ३९ गुरु९ लघु३०॥

दो० जोनयुगतपियमिलनकी दूरिमुक्तमुंहदीन॥
जोलहियेतौसजनसुख धरकनरकहूलीन॥६९४॥

यह प्रस्ताविक अनुरागी को वचन॥ कवित्त॥ वहै ठौर नीको जहां मिलबो है पीको मान यहै मतठीको मेरे जीको अवदात है। पायो जो मुकतपद दरस्यो न प्राणप्यारो सरस्यो अधिक दुख देख्यो न सुहात है॥ कहत अनैन क्योंहूं यातना अनेकभांति जाते भांतिभांतिन को त्रास अधिकात है। रहिबो बनै जो मनभावन सों मिलि तौ पै नरक निवासहू तौ मननसकात है॥६९४॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० गढ़रचनाबरनीअलक चितवनभौंहकमान॥
आघबुकाईहीबढ़ै तरुनितुरंगमतान॥६९५॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ गढको बनाय बांको होयतो बड़ाई पावैं ग्रंथनमें बातयहै बरनी प्रमानकी। अधिकाई देखिये निकाई की बँकाईही तें अलक चितौन भौंह बरनी कमान की॥ कहै कविकृष्णरीति जानत प्रवीन त्योंही तरुनी की तुककी तुरंगम की तानकी। बांकीही तें पालकी के बांसको बढ़त मोल बांकी रजपूती लहै कीरति कृपानकी॥६९५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बसैबुराईजासुतन ताहीकोसनमान॥
भलोभलोकरछांड़िये खोटेग्रहजपदान॥६९६॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति॥ सवैया॥ जातन मांझ बुराई बसै कछू सो जगमें सनमानहीं पावै। वाहीको जीमें सबै डरमानत देखो दुनी में प्रत्यक्ष प्रभावै॥ ज्योतिषी जो ग्रहभाषै भलो सो भलेही भले कहिकै बहरावै। जोपैवहै ग्रह खोटोसुनै तब दानकरै अरुजापकरावै॥६९६॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० पतिऋतुऔगुनगुनबढ़त मानमाहकोशीत ॥
जातकठिनह्वैअतिमृदौ रवनीमनुनवनीत ६९७

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति नायिकाभेदमें सखीको बचन नायकको सखी सौं कि नायकके औगुणते नायिका को मनकठिन होतहीहै ॥ कवित्त ॥ ऐसेपति औ गुणतें बढ़तहै मान जैसे ऋतुगुण शिशिरको शीत सरसात है । मानके भयेते तियमन कठिनातत्यौंही शीतके भयेते नवनीत कठिनात है ॥ दोउन को जऊ अति मृदु है सुभाव तऊ और भांति प्रकृतिको भावदरसालहै । कहै कविकृष्णरीति जानतप्रबीन यह विनयततांईतें तुरतपघिलात है ॥ ६९७ ॥ मराल अच्छर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहतसबैश्रुतिअस्मृतिहु सबैपुरातनलोग ॥
तीनदबावेंनीसकै पातकराजारोग ॥ ६९८ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ कहै यहै श्रुति अरु अस्मृति पुराने लोग सकल पुराणन मैंसुने येई हेत है । कहै कविकृष्ण यह जगत बिदित बात जानत सकल जेते सुमति निकेत है ॥ जहां देखे बलतहां करे न अमल जहां देखे निबलाई ये तहांई दुखदेत हैं । पातकरु राजा रोग दीनमें बिचारिये न करत ब- लाई करैं सबल अचेत है ॥ ६९८ ॥ करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० ओछेबड़ेनह्वैसकैं लग्योसतरह्वैगैन ॥
दीरघहोयँननेकहू फारिनिहारेनैन ६९९

यह प्रस्ताविक कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ जे जगदीश रचे जिहिभाय वे तैसेइदरीसैं बढ़ैं न बढ़ैना । चीरहिये धरि अंदगहै गति पै बगुहंसको मोललहैना ॥- ओछेसों कैसेहू होत बड़े न वे काइ उँचाई गहौकिनगैना । फारि निहारो कितोकरि हारो पै दीरघ होहिं न कैसेहूनैना ॥ ६९९ ॥ मराल अच्छर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोमिसहीसोंयोंसमझ मुँहचूम्योंढिगजाय ॥
हँस्योखिसानीगलुगह्यो रहीगरेलपटाय ७०० ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति नायिका को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कुँवर कन्हाई सुखदाई चतुराई करि पौढिरह्यो मिसझूठी रिसको बनायकै । हित अ- धिकाई की उमंग बढ़िआई जीमें तासौं पिउ जानि मुंह चूम्यौं ढिगजायकै ॥ आरसी में ढारतिमुरंचति उघरिनैन नाइदीनी बांह गरे उठि मुसुकायकै । कथा

कहौं आनीहू तो हँसिहूं सिखाई तब और न बसाय रही गरेलपठायके ॥ ७०० ॥ मत्त अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नयेबिससियेलखिनये दुरजनदुसहसुभाय ॥
आंटेपरिप्राननुहरत कांटेलौंगढ़िजाय ॥ ७०१ ॥

यह प्रस्ताविक नायकको बचन सखीसों बिरस नायिका अधीरा खंडिता नायक राजनीतिके प्रसंगहू में संभवहै ॥ कबित्त ॥ ऊपर तो देखियत अधिक भलाई भरे अन्तरके दुसह बुराईके निकेतहै । कहै कबि कृष्ण बहुबातन बनाय कहै दाँउपरै जैसें बनै तैसे दुख देतहै ॥ देखत हैं नये सऊ मानत बिरोधीनये भूतल न क्योंहूं जे बिचार में सुचेतहै । कांटेकीसी रीति दुरजन के सुभाइन की आंटे परैं प्रानहूं लागि प्रानहेत है ॥ ७०१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तंत्रीनादकबित्तरस सरसरागरतिरंग ॥
अनबूड़ेबूड़ेतिरे जेबूड़ेसबअंग ॥ ७०२ ॥

यह प्रस्ताविक कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ तंत्रीकी मधुर धुनि तालके बिबिध भेद रागजामें सुरनकी बिबिधतरंग है । बचन बिलास चतुराई के प्रकाश चारु कबिता सुदेश जहां बिरसकी उमंग है ॥ बागकी बहार नवनागरीसों हिलमिल बिहरत अन्तरित सुरत प्रसंग है । जगत में बूड़े जे न बूड़े इन बातनमें तिरेतेई बूड़े इते अंगअंग है ॥ ७०२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सबैहँसतकरतारिदै नागरिताकेनाउँ ॥
गयोगरबगुनरूपको बसेगँवारेगाउँ ॥ ७०३ ॥

यह अन्योक्ति प्रस्ताविकहू संभव है कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ को समझै रस रीतिके भेदहि कौनसुनै नृपनीति उचारै । ज्ञानकी कौन करै चरचा जहँ मूढ़ताके हितसों अतिप्यारै ॥ नागरताई को नाम सुने सब दै करतार हँसै किलकारै । दूरगुमान गयो गुनरूपको बास भयो जब गांवगँवारै ॥ ७०३ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १४ लघु १८ ॥

दो० दुसहदुराजप्रजानको क्योंनबढ़ैदुखदन्द ॥
अधिकअँधेरोजगकरतमिलिमावसरबिचन्द ॥ ७०४ ॥

यह प्रस्ताविक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ येकरजाई समै प्रभु द्वै सुत मोगुन को बहुभांति बढ़ावत। होत महादुखद्वंद प्रजानको और सबै शुभकाज थकावत। कृष्णकहै दिननाथ निरंकर एकही मंडल में जब आवत। देखो प्रत्यक्ष अमावसको अँधियारो कितौ जगमें सरसावत ॥ ७०४ ॥

दो० हूंबिनऊंसबककबिनके चरणकमलशिरनाय ॥
प्रकटकरीतिहुँलोकमेंकबिताबहुजिनभाय ७०५॥
सोकबिताद्वैभांतिके आरषपौरुषजानि ॥
आरषसुरअरुमुनिनकृतनरकृतपौरुषमान ७०६
पौरुषकबितात्रिबिधहै कबिसबकहतबखानि ॥
प्रथमदेवबाणीबहुरि प्राकृतभाषाजानि ॥७०७॥
देशभेदसेहोतसो भाषाबहुतप्रकार ॥
बरणतहैंतिनसबनमें ग्वारपरीरससार ॥७०८॥
ब्रजभाषाभाषतसकल सुरबाणीसमतूल ॥
ताहिबखानतसकलकबिजानिमहारसमूल ७०९
ब्रजभाषाबरनीकबिन बहुबिधिबुद्धिबिलास ॥
सबकोभूषणसतसई करीबिहारीदास ॥ ७१० ॥
जोकोऊरसरीतिको समझ्योचाहैसार ॥
पढ़ैबिहारीसतसई कबिताकोश्रृंगार ॥ ७११ ॥
उदयअस्तलौंअवनिये सबकोयाकीचाह ॥
सुनतबिहारीसतसई सबहीकरतसराह ॥७१२॥
भांतिभांतिकेअरथबहु यामेंगूढ़अगूढ़ ॥
जाहिसुनेरसरीतिको मगसमझतअतिमूढ़ ७१३
विविधनायिकाभेदअरु अलंकारनृपनीति ॥
पढ़ैबिहारीसतसई जानैकबिरसरीति ॥ ७१४ ॥
रघुबंशीराजाप्रकट उहिमेंधर्म्मअवतार ॥

बिक्रमबिधिजयशाहरिपु दंडबिहंडनहार॥७१५॥
सुकबिबिहारीदाससों तिनकीनोअतिप्यार॥
बहुतभांतिसनमानकरि दौलतदईअपार॥७१६॥
राजाश्रीजयसिंहके प्रकट्योतेजसमाज॥
रामसिंहगुनरामसमनृपतिगरीबनिवाज॥७१७॥
कृष्णसिंहतिनकेभये केहरिराजकुमार॥
बिष्णुसिंहतिनकेभये सूरजकोअवतार॥ ७१८॥
महाराजबिशनेशके धर्मधुरन्धरधीर॥
प्रकटभयेजयशाहनृप सुमतिसवाईबीर॥७१९॥
प्रकटसबाईभूपके मन्त्रीमनिसुखसार॥
सागरगुनसतशीलको नागरपरमउदार॥७२०॥
आयामल्लअखण्डतप जगसोहतयशताहि॥
राजाकीनोकरिकृपा महाराजजयशाहि॥ ७२१॥
मनक्रमबचसांचोभगत हरिभक्तनकोदास॥
बेदबचननिजधरमको जाकेदृढ़बिश्वास॥७२२॥
क्षत्रीफलक्षितिपैभये बैरीजगबिख्यात॥
परदुखबैरीखण्डनो खण्डनगुनअवदात॥७२३॥
लालदासअतिललितगुन प्रकटभयेतिहिबंश॥
रामचन्द्रतिनकेभये निजकुलकेअवतंश॥७२४॥
महाराजतिनकेभये जिनकोयशअवदात॥
रायपंजाबसपूतमति उपजेतिनकेतात॥ ७२५॥
तिनकेप्रकटेतीनसुत बिक्रमबुद्धिनिधान॥
रक्षकब्राह्मणगायके निपुणदानकरबान॥७२६॥
राजाआयामल्लजग बिदितरायशिवदास॥

लसतनरायनदासयश पूरनपुहुमिप्रकास ७२७॥
लीलायुगलकिशोरकी रसकोहोयनिकेतु ॥
राजाआयामल्लको ताकबितासोंहेतु ॥ ७२८॥
माथुरबिप्रककोरकुल कह्योकृष्णकबिनांव ॥
सेवकहौंसबकबिनको बसतमधुपुरीगांव॥७२९॥
राजामलकबिकृष्णपरि ढर्योकृपाकेढार ॥
भांतिभांतिबिपदाहरी दीनीलक्षिअपार ॥७३०॥
एकदिनाकबिसोंनृपति कहीकहीकोजात ॥
दोहादोहाप्रतिकहौ कबितबुद्धिअवदात ॥७३१॥
पहिलेहूमेरेयहै हियमेंहुतोबिचार ॥
करौंनायिकाभेदको ग्रंथसुबुधिअनुसार ॥ ७३२ ॥
जेनीकेपूरबकबिन सरसग्रंथसुखदाय ॥
तिनहिंछांड़मेरेकबित कोपढ़िहैमनलाय॥७३३॥
जानियहैअपनेहिये कियोनग्रंथप्रकास ॥
नृपकोआयसुपाइकै हियमेंभयोहुलास ॥ ७३४ ॥
करेसातसैदोहरा सुकबिबिहारीदास ॥
सबकोऊतिनकोपढ़ै गुनैसुनैसबिलास ॥ ७३५॥
बड़ोभरोसोजानिमैं गह्योआसरोआय ॥
यातेइनदोहानसँग दीनोंकबितलगाय ॥ ७३६ ॥
उक्तियुक्तिदोहानकी अक्षरजोरिनवीन ॥
करेसातसैकबितमैं पढ़ैंसुकबिपरवीन ॥ ७३७ ॥
मैंअतिहीढीठ्योकरी कबिकुलसरलसुभाय ॥
भूलचूककछुहोयसो लीजोसमुझिबनाय॥७३८॥

इतिश्रीबिहारीलालकबिकृतसतसईसटीकउदाहरणसहितसमाप्ता ॥

कविकुलकल्पतरु की० ।)-॥

भूषणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दों में नायिकाभेदकी पूरी बातें लिखी हैं॥

प्रेमरत्न की०)≡

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादी रत्नकुँवरिरचित केवल श्रीकृष्ण और रामचन्द्रजीकीभक्तिपक्षका विषय दोहाचौपाईमेंहै॥

जगद्विनोद की०)≡

पद्माकरकविकृत जिसमें नायिकाभेदमें सर्वप्रकार के रसवर्णन कियेगयेहैं ऐसी उत्तम सर्वलक्षणयुक्त काव्यकीपुस्तककोईनहींहै॥

रसचन्द्रोदय व रसदृष्टि की०)≡

उदयनाथजी व शिवनाथजी रचित इसमें सब प्रकारकी नायिकाओं का भेद और उनके सर्वप्रकारके अलंकार रचित हैं॥

अनुरागवर्द्धनी की०)≡

मातादीनपांड़ेरचितजिसमें नयेप्रकारकेदोहे चौपाई और कवित्त भक्तों के अनुराग और प्रीतिके बढ़ानेकेलिये वर्णनकियेगयेहैं॥

प्रेमतरंगिणी की० -)॥

मुंशी हफ़ीजुल्लाहखां संगृहीत—प्रत्येक विषयके कवित्त व सवैया हैं॥

कुमारसम्भव की० ।)॥।

काव्य तो प्राचीन है—परन्तु तिलक निहायत उत्तम भाषा में किया गया है॥

प्रेमरत्नाकर की०)≡॥

लक्ष्मीरामकविकृत—नायिकाभेदमें यह ग्रंथ अद्वितीयहै॥

विचित्रोपदेश क़ी० ।॥।

सामयिक कवित्त ऐसे उत्तम इसमें हैं जो बर्षों ढूंढ़ने से नहीं मिलते ॥

रसिकमोहन क़ी० =)॥

कहांतक इसकी प्रशंसाकरैं रसिकों का मनमोहनही है ॥

विश्रामसागर बहुत मोटे अक्षर क़ी० ३) पुख्ता

जिसको महन्त श्रीरघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियों के लिये बनाया जिसमें छहोंशास्त्र और अठारहों पुराण के मत और नवीनरीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजीके सरल चरित्र पद्य में रचे हुये हैं ॥ छोटेअक्षर की क़ीमत १)

नखशिखहज़ारा क़ी० ॥)

जिसमें श्रीराधिकाजी महारानी के नखशिखका बर्णन पद्माकर, पजनेस, परताप, प्रवीन, बेनी, बलदेव, बलभद्र, ब्रह्म, भूषण भगवन्त, मतिराम, मुबारक, रघुराज, रघुनाथ, रसखानि, शम्भु, हठी दिवाकर, सेनापति, दूलह इत्यादि कवियोंके बनाये हुये २३७ दोहा व १००० कवित्त और सवैया विद्यमान हैं ॥

कविप्रिया मूल क़ी०)॥

श्रीकेशवदासजीरचित—जिसमें काव्यके सम्पूर्ण अङ्ग विधि सहित बर्णन कियेगये हैं ॥

कविप्रिया सटीक क़ी० ॥—)

श्रीमहाराजाधिराज काशिराजकी आज्ञानुसार बंदीजन ललितपुरनिवासी सरदार कविने एक २ बर्ण का काव्यरीति पर तिलक किया है और गूढ़स्थलों को इस प्रकार सरल करदिया है कि सूक्ष्म पढ़नेवाला भी अच्छीतरह समझ सक्ता है ॥